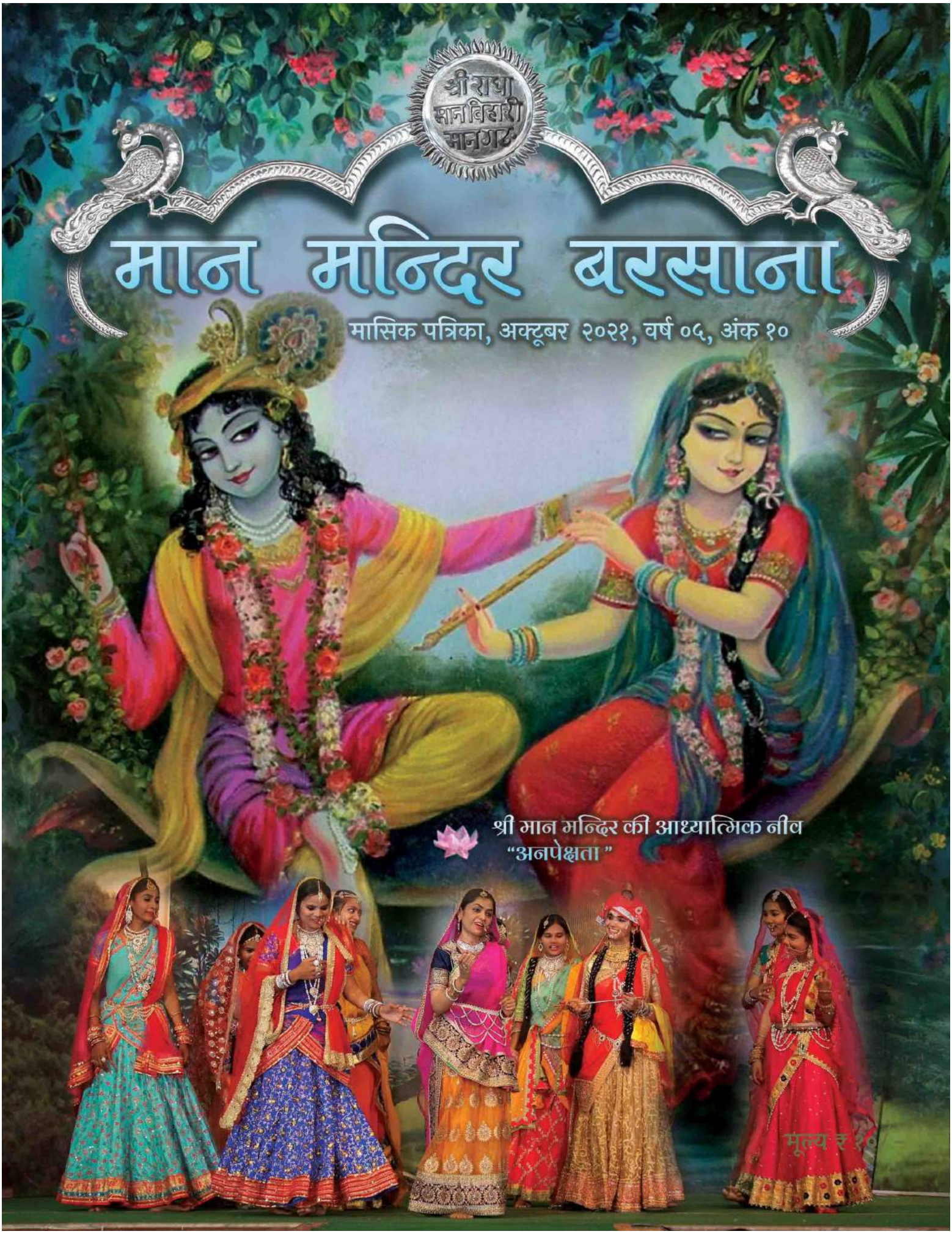
श्री राधा
मान विहारी
मनगढ़
मान मन्दिर बरसाना
मासिक पत्रिका, अक्टूबर २०२१, वर्ष ०५, अंक १०
श्री मान मन्दिर की आध्यात्मिक नीव
"अनपेक्षता"
मूल्य ₹ १०

रस मंडप में आयोजित नाटिका की कुछ झलकियाँ।

अनुक्रमणिका

	विषय- सूची	पृष्ठ- संख्या
१	श्रीमानमंदिर' की आध्यात्मिक नींव 'अनपेक्षता'	०३
२	'श्रीराधा संगीत विद्यालय' की सुव्यवस्थापिका 'श्रीजी व मुरलिकाजी'	१२
३	प्रेम की पाठशाला 'श्रीब्रजभूमि'	१६
४	कृष्णप्रेमी ही परम निष्किञ्चन	१८
५	सबसे सरल साधन 'श्रीधाम-सेवन'	२२
६	'समत्व' से सर्वथा निष्पाप	२६
७	'गौ-संवर्द्धन' से ही होगा उज्जवलतम 'भारतवर्ष'	२९
८	नंदमंदिर में पूज्य बाबा महाराज, मानमन्दिर के साधू, साध्वीयों का अभूतपूर्व स्वागत	३२

राधा रानी को सहारौ मेरौ सांचौ है भली ||

श्री राधा वृषभानु कुमारी
महारानी हैं भोरी भारी
चँदा हू ते रूप उजारी
सदा विराजैं बरसाने में कीरति की लली |
कबहूँ खेलैं पीरी पोखर
कदमन छैयाँ प्रेम सरोवर
सुन्दर है वृषभानु सरोवर
ठौर-ठौर पै लता झूम रही कुञ्जन की गली |
कबहूँ आवै खोर साँकरी
मोहन जहाँ मथनिया फोरी
दधि ते भीजी ब्रज की गोरी
श्री राधा उरजन की शोभा देखैं श्याम छली |
श्री गहवरवन नित्य विहारैं
जहाँ साँवरो डगर बुहारैं
राधा राधा नाम उचारैं
फूलन ते सिंगार करैं लै कमलन की कली ||

— पूज्यश्री बाबा महाराज कृत

|| राधे किशोरी दया करो ||

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो |
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो |
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो |
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो |
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो |
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो |

— पूज्यश्री बाबा महाराज कृत

संरक्षक-

श्रीराधामानबिहारीलाल

प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री,
मानमंदिर सेवा संस्थान,
गह्वरवन बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

(Website :www.maanmandir.org)
(E-mail :info@maanmandir.org)
mob. Radhakant Shastri 9927338666
Braikishordas.....6396322922

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८:०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं |

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले |"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकाले व मासिक, त्रेमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवा द्रव्य किसी विश्वसनीय गौ सेवा प्रकल्प को दान कर गौ-रक्षा कार्य में सहभागी बन अनंत पुण्य का लाभ लें | हिन्दू शास्त्रों में अंश मात्र गौ सेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि || (श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता |

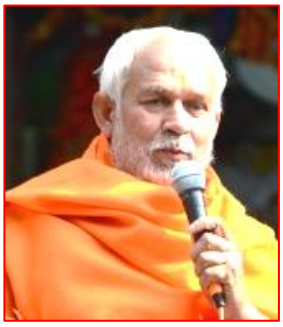

प्रकाशकीय

हर प्राणी आज दुःखी है क्योंकि वह अपेक्षाओं में जी रहा है | जीव की आशाएँ अनन्त हैं, वह निरन्तर वासनाओं का शिकार होता रहता है; 'वासना की पूर्ति हो अथवा न हो' दोनों ही स्थिति में उसे शान्ति नहीं मिलती; शान्ति तभी मिलेगी जब वह 'निरपेक्ष' हो जाएगा | कहा भी है –

आशा हि परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखम् | (श्रीभागवतजी ११/८/४४)

आप धनार्जन कर लेते हैं तो उसके रक्षार्थ कष्ट भोगना पड़ता है और नहीं करते हैं तो उसकी अप्राप्ति में कष्ट अर्थात् 'मिलने अथवा बिछुड़ने' दोनों में ही कष्ट की अनुभूति होती है, फिर सब कुछ निरर्थक है, असत् है | आखिर क्यों होती है अपेक्षा ? जन्म-जन्मान्तर का अभ्यास जो हमें विवश कर देता है; इस असद् अशान्ति से बचने का उपाय केवल 'सत्पुरुषों का संग' ही है क्योंकि वे भगवत्स्वरूप ही होते हैं, सदा सन्तुष्ट रहते हैं | जैसा संग करोगे, वैसे बन जाओगे | ऐसे महापुरुष जिन्होंने अपने जीवन में कभी द्रव्य (पैसे, धन इत्यादि) का स्पर्श तक नहीं किया, उनके संग से आज सैकड़ों साधक-साधिकाएँ मानमन्दिर गह्वरवन में अपेक्षाशून्य जीवन जी रही हैं, जिन्हें न धन की अपेक्षा है और न भोजन, वस्त्रादि की | यदि आशा है तो केवल अपने आराध्य के मिलन की... बस, यही है सच्चा रास्ता, जिस पर चलकर कोई भी प्राणी सदा-सदा के लिए शोक रहित हो सकता है |

हमारी मासिक पत्रिका 'मानमन्दिर बरसाना' अवश्य ही पाठकों को ऐसी प्रेरणा दे रही होगी जो सदा-सदा के लिए जीव को निर्भय व सुखी जीवन जीते हुए प्रभु-प्रेम में अनुरक्त कर सके; ऐसी हमारी सद्भावना है |

प्रबन्धक

राधाकान्त शास्त्री

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

श्रीमानमंदिर' की आध्यात्मिक नींव 'अनपेक्षता'

असली आध्यात्मिकता की आधार-शिला 'अनपेक्षता' ही है | 'कभी भी किसी प्रकार की अपेक्षा (कामना इत्यादि) न होना' अनपेक्षता (अकिञ्चनता, निरपेक्षता, निष्किञ्चनता, निष्कामता, निःस्पृहता) है |

विषयों में गुणबुद्धि होने से आसक्ति हो जाती है और आसक्ति से ही कामना उत्पन्न होती है –

विषयेषु गुणाध्यासात् ... | (श्रीभागवतजी ११/१९/२१)

स्वयं श्रीभगवान् के वचन हैं कि कर्मफल से सर्वथा अनासक्त होकर (निष्कामभावपूर्वक) केवल कर्म (सेवा) करने में ही अधिकार (सर्वात्मसमर्पित) हो –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

(श्रीगीताजी २/४७)

इस श्लोक में 'कदाचन' का भाव है कि किसी भी विषम से विषम परिस्थिति में भी किसी प्रकार की कामना (अपेक्षा, फलेच्छा) न की जाए |

अनादिकाल से चारों युगों में सदा ही विशुद्ध प्रेमी भक्तजनों का परमाभूषण 'अनपेक्ष भाव' ही रहा है, इसी भाव की प्रगाढ़ता व सुदृढ़ता के कारण उन सभी प्रेमाराधकों की भक्ति नित्य-निरन्तर बढ़ती रही है |

'निरपेक्षता' से ही सभी भक्तिमय सद्गुणों की सच्ची शोभा बढ़ती है –

"श्रीर्गुणा नैरपेक्ष्याद्याः" (श्रीभागवतजी ११/१९/४१)

'निरपेक्षता' ही सर्वश्रेष्ठ व परमकल्याणकारी गुण है, इसी से ही श्रीभगवान् की परमप्रेममयी भक्ति की प्राप्ति होती है |

नैरपेक्ष्यं परं प्राहुर्निःश्रेयसमनल्पकम् ।
तस्मान्निराशिषो भक्तिर्निरपेक्षस्य मे भवेत् ॥

(श्रीभागवतजी ११/२०/३५)

जिन भक्तों के तन-मन-प्राण एकमात्र श्रीभगवान् ही होते हैं, उन्हें 'निष्किञ्चन भक्त' कहते हैं | निष्किञ्चनजनों के सारसर्वस्व 'श्रीइष्ट भगवान्' होते हैं तो परम निष्किञ्चन श्रीठाकुरजी के भी आत्मस्वरूप परम प्रिय 'निष्किञ्चन भक्त' ही होते हैं |

हरिरधनात्मधनप्रियो रसज्ञः ।

(श्रीभागवतजी ४/३१/२१)

श्रीइष्ट-प्रेम में निरन्तर निमग्न होने से परम संतृप्त अकिञ्चन भक्त को लौकिक, पारलौकिक व मोक्ष इत्यादि सब सुख सीठे (फीके, रसहीन) लगते हैं |

अकिञ्चनस्य दान्तस्य शान्तस्य समचेतसः |
मया सन्तुष्ट मनसः सर्वाः सुखमया दिशः ॥
न पारमेष्ठ्यं न महेन्द्रधिष्ण्यं न सार्वभौमं न रसाधिपत्यम् ।
न योगसिद्धीरपुनर्भवं वा मय्यर्पितात्मेच्छति मद्विनान्यत् ॥ (श्रीभागवतजी ११/१४/१३,१४)

श्रीभगवान् स्वयं पवित्र होने के लिये निरपेक्ष भक्त के पीछे-पीछे उसकी चरणरज-प्राप्ति के लिए चलते हैं -

निरपेक्षं मुनिं शान्तं निर्वैरं समदर्शनम् ।
अनुव्रजाम्यहं नित्यं पूयेयेत्यङ्घ्रिरेणुभिः ॥

(श्रीभागवतजी ११/१४/१६)

श्रीभगवान् कहते हैं कि मैं स्वयं निष्किञ्चन हूँ और एकमात्र निष्किञ्चन भक्त ही मुझे नित्य परम प्रिय हैं, इसलिए धनिक (सांसारिक धन आदि की आसक्तियों में जकड़े लोग) मेरा स्मरण-चिंतन नहीं करते हैं |

निष्किञ्चना वयं शश्वन्निष्किञ्चनजनप्रियाः ।
तस्मात् प्रायेण न ह्याढ्या मां भजन्ति सुमध्यमे ॥

(श्रीभागवतजी १०/६०/१४)

अतः 'श्रीभगवान् के भक्तिरस' का यथार्थ आस्वादन 'निरपेक्ष भक्तजन' ही करते हैं |

श्रीभरतजी ने भी जन्म-जन्मान्तरों में एकमात्र श्रीराम-प्रेम की ही याचना है, जिससे उनकी परम निरपेक्षता प्रकट होती है –

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान |
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन ||

(श्रीरामचरितमानसजी, अयोध्याकाण्ड – २०४)

श्रीकृष्ण की द्वारिकालीला में परम निःस्पृह भक्त श्रीसुदामाजी के बारे में श्रीभक्तमाल-टीकाकार श्रीप्रियादासजी लिखते हैं –

"बड़ो निष्काम सेर चूनहू न धाम" (कवित्त – ५३)

भक्तमाल-सुमेरु गो. तुलसीदासजी की भी 'निरपेक्षता' परम स्मरणीय है –

चहौं न सुगति-सुमति-संपति कछु, रिधि-सिधि बिपुल बड़ाई |
हेतु रहित अनुराग राम पद, बढ़ै अनुदिन अधिकाई ||

(विनयपत्रिका – १०३)

ब्रजगोपीजनों ने भी सर्वविषयों का त्याग करके परम निरपेक्षता को प्राप्त कर लिया, जिससे वे श्रीकृष्णमय हो गईं – **सन्त्यज्य सर्वविषयांस्तव पादमूलम् |**

(श्रीभागवतजी १०/२९/३१)

"स्याम तन, स्याम मन, स्याम ही हमारौ धन |"

'अनपेक्षता की पराकाष्ठा' में श्रीजी की सहचरियाँ ही हैं, श्रीराधिकारानी के प्रेमरसविलास में नित्य निमग्न होने के कारण जिनको श्रीकृष्ण-मिलन भी आकर्षित नहीं कर सका - (श्रीराधसुधानिधि -५५)

निजप्राणेश्वर्य्याः यदपि दयनीयेयमिति माम्
मुहुश्चुम्बत्यालिङ्गतिसुरतमाध्व्या मदयति |
विचित्रां स्नेहर्द्धिं रचयति तथाप्यद्भुतगते-
स्तवैव श्रीराधे पदरसविलासे मम मनः॥

श्रीइष्टप्रेम के लिए सर्वात्मसमर्पण करना पड़ता है, तभी प्रेम परिपक्व होता है -

राम प्रेम पथ पेखिये दिये विषय तन पीठि |
तुलसी केंचुरि परिहरें होत साँपहू दीठि ॥

(दोहावली)

प्रकृति का नियम है, जब तक सर्प की आँख पर काँचुरी रहती है तो उसे दिखायी नहीं देता है, थोड़े समय बाद जब वह अपने आप हट जाती है, तब सर्प को दिखाई देता है; इसी प्रकार जब तक विषयों की काँचुरी हमारी आँखों को ढके हुए है, तब तक श्रीभक्तिरस की प्राप्ति तो दूर, उस रस का मार्ग भी दिखाई नहीं देगा। दिव्य रस-प्राप्ति के लिए विषयों की ओर पीठ करनी होगी। अभी तो स्थिति यह है कि हम स्वयं काँचुरी इकट्ठा करने में लगे हुए हैं। उपदेश करते हैं त्याग का और वृत्तियाँ हैं संग्रह की तो कोई क्या त्याग सीखेगा, स्थिति तो है –

"घर-घर फिरत उगाहत चन्दा।"

(श्रीविहारिन देव जी की वाणी-९१)

परीक्षितजी ने पूछा –

स कथं धर्मसेतूनां वक्ता कर्ताभिरक्षिता।
प्रतीपमाचरद् ब्रह्मन् परदाराभिमर्शनम् ॥

(श्रीभागवतजी १०/३३/२८)

धर्म-मर्यादा को बनाने वाला, उपदेश करने वाला एवं रक्षा करने वाला ही यदि धर्म-विरुद्ध आचरण करेगा तो संसार क्या सीखेगा? धर्मरक्षक में तीन बातों का होना आवश्यक है। (१) उपदेश (२) तदनुसार आचरण एवं (३) धर्म की रक्षा।

करुणावतार श्रीमच्चैतन्यदेव ने एक वृद्धा महिला से बात करने पर छोटे हरिदास के प्रति कितना कठोर आचरण किया क्योंकि वे जो कह रहे हैं, उसका स्वयं आचरण

करेंगे तभी तो उसकी रक्षा होगी, अतः कभी-कभी कठोर आचरण भी करना पड़ता है।

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥

(श्रीगीताजी १६/२३)

श्रीभगवान् बोले – जो लोग शास्त्रीय सिद्धान्त के विरुद्ध मनमाना आचरण करते हैं, वे न सिद्धि प्राप्त करते हैं, न सुख और न परमगति ही।

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि॥

(श्रीगीताजी १६/२४)

अतः शास्त्रोक्त कर्म ही करो।

स्मृति कहती है – **'परद्रव्येषु अभिध्यानम्'** – मन में परधन लेने की इच्छा का आना भी पाप है।

'अभि' उपसर्ग का यहाँ बहुत महत्त्व है। **'अभिमुख्येन ज्ञानं अभिज्ञानम्'** कालिदास की कृति का नाम **'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'** है। दुष्यन्त ने अभिज्ञान किया – 'हाँ, ये शकुन्तला मेरी है।'

शरीर के तीन पापों में एक पाप 'अभिध्यान' भी है। किसी दूसरे की वस्तु को लेना तो दूर, लेने का विचार भी आना पाप है।

निष्किञ्चनता की परम सिद्धि के लिए प्रथम लक्षण है –

'जो कोउ प्रभु के आश्रय आवै।'

अर्थात् श्रीभगवान् के आश्रित हो जाएँ।

'अनपेक्षभाव' की संसिद्धि के लिए द्वितीय लक्षण है –

'सो अन्याश्रय सब छिटकावै।'

अर्थात् अन्याश्रय का बिल्कुल त्याग कर दे। आज सम्पूर्ण समाज अन्याश्रय में डूबा है - कोई अर्थ का, कोई सेठों का, तो कोई शिष्यों का आश्रय लिये हुए है।

जो गुरु करै शिष्य की आस।
श्याम भजन ते भया उदास॥

(श्रीबिहारिनदेवजी की वाणी-१४)

शिष्य का आश्रय लेने वाले गुरु का 'भगवदाश्रय' सिद्ध नहीं होगा, जीवाश्रय के रहते भगवदाश्रय कभी सिद्ध नहीं होगा।

श्रीप्रह्लादजी कहते हैं कि हे नाथ ! मैं संसारासक्ति से भयभीत होकर आपकी शरण में आया हूँ।

(श्रीभागवतजी ७/१०/२)

तदा पुमान्मुक्तसमस्तबन्धनस्तद्भावभावानुकृताशयाकृतिः।

(श्रीभागवतजी ७/७/३६)

जब आसक्ति नष्ट होगी, तब ही तद्भाव अर्थात् कृष्णभाव की प्राप्ति होगी। जैसी भावना होगी, वैसा ही आशय (अन्तःकरण) बनेगा।

जब वृत्ति कृष्णमयी होगी, तब ही अनुशयाकृति 'कृष्णाकृति' होगी। कृष्णाकृति अर्थात् कृष्ण-ममता प्राप्त होगी अनन्तर जन्म-मृत्यु का बीज जल जायेगा।

हम रौरव नरक की तैयारी में लगे हुए हैं और स्वयं को अनन्य समझते हैं, यह आत्मवञ्चना है।

'सर्वभाव से भगवान् के शरणागत हो जाना' यही विशुद्ध भागवतधर्म है। सर्वभाव में सभी सम्बन्ध, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार – सबका ग्रहण है अर्थात् सर्वभाव से भगवान् में ही सब सम्बन्ध स्थापित कर दिये जाएँ।

जिसका अन्तःकरण (मन, बुद्धि...) इन्द्रियाँ (वाणी, श्रोत्रादि....) एवं सब सम्बन्ध (गुरु, माता, पिता ...इत्यादि) श्रीभगवान् में हैं, वही अनन्य है।

देवानां गुणलिङ्गानामानुश्रविककर्मणाम्।
सत्त्व एवैकमनसो वृत्तिः स्वाभाविकी तु या॥

(श्रीभागवतजी ३/२५/३२)

ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय तथा मन की 'श्रीभगवान्' में स्वाभाविक गति का नाम ही 'अनन्य भक्ति' है|

श्रीसूरदासजी ने भी कहा है -

इहिं बिधि कहा घटैगौ तेरौ?
नंदनंदन करि घर कौ ठाकुर, आपुन ह्वै रहु चेरौ ॥
कहा भयौ जौ संपति बाढ़ी, कियौ बहुत घर घेरौ ।
कहुँ हरि-कथा, कहुँ हरि-पूजा, कहुँ सन्तनि कौ डेरौ ॥
जो बनिता-सुत-जूथ सकेले, हय-गय-बिभव घनेरौ ।
सबै समर्पौ 'सूरस्याम' कौं, यह साँचौ मत मेरौ ॥

'न अन्य यस्य सः अनन्य' – जिसका कोई दूसरा है ही नहीं, वह अनन्य है।

सच्चे अनन्य थे ब्रजवासीजन –

एषां घोषनिवासिनामुत भवान् किं देव रातेति न-
श्वेतो विश्वफलात् फलं त्वदपरं कुत्राप्ययन्मुह्यति ।
सद्वेषादिव पूतनापि सकुला त्वामेव देवापिता
यद्धामार्थसुहृत्प्रियात्मतनयप्राणाशयास्त्वत्कृते ॥

(श्रीभागवतजी १०/१४/३५)

जिसका अपना कुछ है ही नहीं। घर, धन, सुहृद, प्रिय, शरीर, पुत्र, प्राण, अन्तःकरण – सब कुछ तो आपका ही है; अपने प्राण भी तो अपने लिए नहीं, वे भी कृष्ण के लिए हैं। इसलिए श्रीकृष्ण के मथुरागमन के बाद ब्रजगोपियों ने प्राण-परित्याग नहीं किया, वे असह्य वियोग का वहन करती रहीं, जो वस्तु कृष्ण की है उसे नष्ट करने का अधिकार हमें कहाँ?

आज भी ब्रजवासी गाते हैं –

रस ले तो द्वार पर्‌यो रहियो ।
जो रसिया तू रस को भूखो, मारधार सबकी सहियो ॥

अतः अनन्य आराधिकाओं के श्रीभगवान् भी ऋणी हुए –

न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां
स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः ।
या माभजन् दुर्जरगेहशृङ्खलाः
संवृश्च्य तद् वः प्रतियातु साधुना ॥

(श्रीभागवतजी १०/३२/२२)

हे गोपिकाओ ! तुमने मेरे लिए सर्वत्याग किया, अतः मैं तुम्हारा भजन करने के लिए एकान्त में चला गया था। मैं अनन्त सर्वशक्तिमान ईश्वर तुम्हारा ऋणी हूँ। यदि तुम ऋण देने वाली 'गोपियाँ' स्वयं ही मुझ ऋण लेने वाले 'कृष्ण' को उऋण कर दें तो ठीक है, अन्यथा मैं तो जन्म-जन्मान्तर तक तुम सबका ऋणी ही रहूँगा ...।

कोई दुर्जर देह-गेह की श्रृंखलाओं (अहंता-ममता आदि) को तोड़ने का साहस तो करे, भगवान् भी ऋणी हो जाते हैं। **"लोक-वेद की कठिन श्रृंखला तोड़ें गोपी वीर ।"**

सर्वात्मभाव की शरणागति में गुरुधर्म, मातृधर्म, आचार्य-धर्म.....सभी धर्म गौण हो जाते हैं।

वृन्दानि सर्वमहतामपहायदूराद् वृन्दाटवीमनुसर प्रणयेन चेतः ।
सत्तारणीकृतसुभावसुधारसौघंराधाभिधानमिह
दिव्यनिधानमस्ति ॥ (रा.सु.नि. ८)

राधासुधानिधिकार तो यहाँ तक कहते हैं कि यदि तुम्हें महापुरुष-संश्रय (सद्गुरु-आश्रय) की आवश्यकता भी है तो अन्यत्र क्यों जाते हो? इस धाम में सत्-तारिणीनिधि (सत्पुरुष-तारिणी) श्रीराधारानी विराजमान हैं, जिन्होंने अनेक महापुरुष, सत्पुरुषों का कल्याण किया; वे तुम्हारा भी कल्याण करेंगीं, उन्हें ही गुरु मान लो।

स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात।
मन मन्दिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दोउ भ्रात ॥

(रा.च.मा. अयो. १३०)

'अनन्यता व अनपेक्षता' का पारस्परिक घनिष्ट सम्बन्ध है, 'अनन्य शरणागत भक्त' में ही असली अनपेक्षभाव आता है; ऐसे ही अनन्य व अनपेक्ष भाव के साक्षात् स्वरूप थे - श्रीधरस्वामीजी, जिनके भक्तिभाव से रीझकर के स्वयं बिन्दु माधव भगवान् 'माधव विद्यार्थी' का रूप

बनाकर के आये और स्वामीजी की अस्वस्थ्य अवस्था में सभी प्रकार की सेवा की...| इसी प्रकार की घटना बाबाश्री के जीवन में भी आज से लगभग ६५ वर्ष पूर्व घटी है, जिस समय वे मानमन्दिर में अकेले ही रहते थे |

एकबार श्रीबाबामहाराज अत्यन्त अस्वस्थ्य हो गए कि चलना-फिरना भी बन्द हो गया, एक पुराने कमरे में भूखे-प्यासे पड़े थे; ऐसी स्थिति में परमभक्तवत्सल करुणानिधान श्रीप्रभु से नहीं रहा गया और एक ब्रजवासी का वेष बनाकर आये और प्रणाम करके बोले – 'बाबा ! ये पानी है, इसे पी लो |' 'बाबा' ने जैसे ही उस जल को पिया, पीते ही शरीर में एक अद्भुत चेतना व शक्ति आई और बहुत जोर की भूख लगी, जिससे बाबाश्री भिक्षा माँगने के लिए कुटिया के बाहर निकले लेकिन वह पानी पिलाने वाला व्यक्ति कहीं भी दिखाई नहीं दिया; श्रीबाबामहाराज इस आश्चर्यमयी घटना से एक विशेष भावसिन्धु में गोते लगाते रहे .....|

जब अपने श्रीइष्ट का अनन्याश्रय व अन्यत्र अनपेक्षभाव होता है तो वह इष्ट अनेकों रूपों में हमारी सेवा कर जाता है, हम समझ भी नहीं पाते हैं | परम निरपेक्ष संत बाबाश्री की श्रीराधारानी में अनन्य शरणागति है, इसीलिये साक्षात् श्रीजी ही अनेक रूपों में आकरके श्रीबाबा की सेवा करती हैं | 'अनपेक्षभाव' से भावित बाबाश्री द्वारा रचित रसियाओं की कुछ पंक्तियाँ हैं -

(१) हमकूँ कहा और सौं काम, हमारी राधे महारानी ||
धन-दौलत की आस नेंक ना,
विषय भोग सौं गरज नेंक ना,
मुक्ति हू की चाह नेंक ना,
प्रेम पंथ में देखैं ना हम राजा और रानी |
(२) कछू न संग्रह करौं न माँगौं, नहिं कछु आस लगाऊँ |
राधा नाम रटूँ राधा जस, सुनूँ राधिका ध्याऊँ ||
तुच्छ विषय की कौन कहै जब, मुक्ती हू तज डारौं |
बरसाने के घूरे बसके, दिव्यलोक सब वारौं ||

बाबाश्री का सम्पूर्ण जीवन ही 'अनपेक्षभाव' से ओतप्रोत है | जितना निरहं भाव (अभिमान शून्य अन्तःकरण) होगा, उतनी ही हमारी अनन्यता व अनपेक्षता होगी, उतनी ही श्रीइष्ट की शक्ति हमारे साथ होती है | 'अनपेक्षता' के कारण ही बाबाश्री के समस्त श्रीब्रजसेवा के कार्य साक्षात् श्रीजी ने ही अनेकों रूप से किये हैं |

प्रायः सत्संग में श्रीबाबामहाराज कहते हैं कि जब हम अनपेक्ष (अनन्य) हो जाते हैं तो हमारा इष्ट ही 'प्रत्येक अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति में अनेक स्वरूपों में आकरके' हमारी सेवा करके हमसे प्यार करता है |

श्रीमानमंदिर द्वारा संचालित समस्त गतिविधियाँ श्रीबाबामहाराज के अद्भुत निष्काम (निरपेक्ष) सेवाभाव के सिद्धांतों पर आधारित हैं | राजस्थान के प्रसिद्ध संत श्रीनित्यानन्दजीमहाराज के अनुरोध से 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' का सन् १९८८ में बाबाश्री द्वारा शुभारम्भ इस शर्त पर किया गया कि ब्रजयात्रियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा; नित्यानन्दजीमहाराज कई वर्षों तक इस यात्रा के भोजन-व्यवस्था में सहयोग करते रहे, प्रतिवर्ष यात्रियों की संख्या में वृद्धि होने पर उन्होंने पूज्य बाबा महाराज से कहा कि आप इस 'ब्रजयात्रा' के लिए सौ रुपये शुल्क निर्धारित कर दीजिये, सौ रुपये अधिक भी नहीं है और उससे यात्रा के लिए आर्थिक-व्यय की भी पूर्ति हो जाएगी, उनकी बात को सुनकर श्रीबाबा ने कहा कि ब्रजयात्रियों से पैसा लेना मैं पाप समझता हूँ | यात्रा को अर्थ के अभाव में बन्द करना मुझे स्वीकार है किन्तु किसी यात्री से सौ रुपये तो क्या, एक रुपया भी मैं नहीं ले

सकता | इस यात्रा का नाम 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' है, अतः वे ही यात्रा को चलाती हैं, उनके रहते हमलोग किसी व्यक्ति से धन लेकर 'राधारानी के नाम' को कलंकित नहीं करेंगे | श्रीबाबामहाराज की बात सुनकर नित्यानंद महाराज ने भविष्य में यात्रा हेतु भोजन-व्यवस्था में सहयोग करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की | श्रीबाबा ने उनसे कहा कि आप भोजन-व्यवस्था में सहयोग बन्द कर दीजिये परन्तु ब्रजयात्रा में अवश्य सम्मिलित रहिये...| आगे चलकर 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' में पन्द्रह हजार से भी अधिक यात्री चलने लगे, किसी से कोई शुल्क नहीं लिया गया और आज यह 'ब्रजयात्रा' भारत की सबसे बड़ी निःशुल्क पदयात्रा बन गई है |

'श्रीमाताजी गौशाला' की सन् २००७ में बाबाश्री के द्वारा स्थापना की गई | केवल चार-पाँच गायों के साथ इस गौशाला का शुभारम्भ किया गया | उस समय महाराजश्री ने मानमन्दिर के व्यस्थापकों से कहा था कि यदि अपनी स्वार्थमयी वृत्तियों का त्यागकर पूर्ण निष्काम भाव से आप लोग गौमाता की सेवा करेंगे तो यह गौशाला भारत ही नहीं अपितु विश्व की सबसे बड़ी गौशाला बन जाएगी | उस समय गौशाला के व्यवस्थापक अति निःस्पृह संत श्रीब्रजशरणजीमहाराज ने श्रीबाबा की आज्ञा को पूर्णरूपेण शिरोधार्य किया और निष्काम भाव से गौमाता की सेवा हेतु अपना जीवन समर्पित कर दिया | श्रीबाबा के त्याग के सिद्धांत का अनुकरण करते हुए उन्होंने आज तक अपने लिए एक भी पैसे का संग्रह नहीं किया, यहाँ तक कि वे गौशाला की गायों का दूध भी नहीं पीते हैं | श्रीबाबा के मार्गदर्शन में पूर्ण निष्काम भाव से सेवा करने के कारण ही यह गौशाला आज विश्व की सबसे बड़ी गौशाला बन गयी है | इस गौशाला में कुछ समय तक अमेरिका से आर्थिक सहयोग प्राप्त होता था, अब कुछ वर्षों से यह आर्थिक सहयोग बंद हो चुका है किन्तु बाबा महाराज ने कहा कि यह गौशाला किसी मनुष्य के दान अथवा सहयोग से नहीं चल रही है | गायों के रक्षक और उनके पालक तो गोपालजी हैं, अतः जीवाश्रय छोड़कर एकमात्र 'श्रीगोविन्द' का ही आश्रय पकड़ो, वे ही इस गौशाला को चला रहे हैं और भविष्य में भी वे ही इस गौशाला का पालन करते रहेंगे, पूज्य बाबाश्री के इसी सुदृढ़ श्रीभगवद्विश्वास के कारण यह गौशाला सुचारु रूप से चल रही है और विदेशी सहायता बंद होने पर भी गौसेवा में किसी प्रकार का अवरोध उपस्थित नहीं हुआ | विदेशी आर्थिक सहयोग बंद होने पर भी श्रीजी की कृपा से इस गौशाला में १५ करोड़ की धनराशि से 'बीमार और घायल गौवंश की चिकित्सा' हेतु अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त एक विशाल 'चिकित्सालय' की स्थापना हो गई | इस गौशाला में उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा 'गोबर गैस संयन्त्र' स्थापित किया गया है तथा कृषि को और अधिक उपजाऊ बनाने के लिए इस गौशाला में गाय के गोबर द्वारा जैविक खाद का निर्माण किया जाता है, जिसका ब्रजवासी किसानों द्वारा अपने खेतों में भरपूर मात्रा में उपयोग किया जाता है | आर्थिक सहायता के अभाव में भी इस गौशाला में श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से एक झील का निर्माण किया जा रहा है, साथ ही पहाड़ों पर झरने भी बनाए जा रहे हैं जो बारह महीने निरन्तर प्रवाहित होते रहेंगे |

श्रीराधारसमंदिर के सभी सदस्य श्रीबाबा महाराज के आनुगत्य में पूर्ण निरपेक्षता के साथ संत-भक्तजनों की सेवा में समर्पित हैं | साध्वी मुरलिकाजी की दादी और डॉ. श्रीरामजीलालशास्त्रीजी की माताजी पूज्या 'श्रीमती

यमुनाजी' और उनके पति श्रीबाबूलालजी बरसाना से तीन किलोमीटर दूर ऊँचागाँव में एक साधारण-से स्कूल में अध्यापन कार्य करते थे, उस जमाने में बहुत ही अल्प वेतन मिलता था, घर की आर्थिक स्थिति भी अत्यधिक शोचनीय थी; ऐसी स्थिति में भी 'यमुनादेवी' साधु-संतों को अत्यधिक श्रद्धा के साथ भोजन कराया करतीं थीं | श्रीबाबामहाराज के मानगढ़ रहने पर तो वह पूर्णतया उन्हीं के शरणापन्न हो गयीं | उस समय मानमन्दिर पर रहने वाले सभी संत 'रसमन्दिर' में ही भोजन करते थे | श्रीबाबामहाराज के सत्संग में सम्मिलित होने वाले श्रद्धालुओं की संख्या भी दिनों-दिन बढ़ती चली गयी | अधिकतर जो लोग बाहर से आते थे, वे सभी 'रसमन्दिर' में ही भोजन करते थे | घोर आर्थिक विपन्नता के बावजूद भी पूज्या 'यमुनादेवी' बड़े प्रेम से सभी अतिथियों को भोजन कराती थीं | धन की कमी और सामर्थ्य से अधिक सेवा के कारण 'रसमंदिर' पर ४३ हजार रुपये ऋण हो गया | श्रीबाबा को जब इसका पता पड़ा तो उन्होंने 'यमुनाजी' को समझाया कि इतना अधिक ऋण हो गया है, अतः ऐसी स्थिति में भोजन-सेवा बंद कर दो किन्तु संत-सेवा में सुदृढ़ भाव रखने वाली 'श्रीयमुनादेवी' ने उत्तर दिया – 'जब तक मैं जीवित हूँ, तब तक यह सेवा कभी बन्द नहीं हो सकती, मेरी मृत्यु के उपरान्त भले ही सेवा बन्द हो जाए |' परन्तु यमुना देवी के इस उत्कट सेवा-भाव का यह परिणाम हुआ कि उनके द्वारा प्रारम्भ की गयी 'साधु-संत-सेवा' ने कभी विराम नहीं लिया और वर्तमानकाल में तो इस सेवा ने अत्यधिक विशाल रूप धारण कर लिया है, हजारों भक्तजन, अतिथिगण प्रतिदिन रसमंदिर में भोजन-प्रसाद ग्रहण कर अपने को कृतकृत्य समझते हैं | 'यमुना देवी' ने निष्किञ्चन-वृत्ति से जीवन-यापन करते हुए आजीवन अतिथिजनों की सेवा की, धन के अभाव की उन्होंने कभी परवाह नहीं की और कभी भी किसी से धन की याचना नहीं की, अयाचित-वृत्ति से निष्काम-सेवा व्रत को दृढ़तापूर्वक निभाया और अपने सम्पूर्ण परिवार को भी निष्काम सेवा के प्रति समर्पित कर दिया | आज उन्हीं की इस दुर्लभ सेवा-भावना का चमत्कार है कि उनके घर में चार श्रीभागवतकथा-व्यास हैं | डॉ. श्रीरामजीलालशास्त्रीजी प्रसिद्ध भागवत-व्यास हैं, जो देश-विदेश में निष्काम भाव से श्रीभागवत-कथा का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं | श्रीयमुनादेवीजी की पौत्रियाँ 'श्रीजी, मुरलिकाजी' भी श्रीभागवतकथा-व्यास बनकर देश-विदेश में निष्काम भाव से श्रीभगवद्भक्ति का प्रचार-प्रसार कर रहीं हैं और विदेशों में भारत का यश-वर्द्धन कर रहीं हैं | इनके अतिरिक्त यमुनादेवी के पौत्र श्रीराधिकेशजी भी भागवतकथा-व्यास हैं; ये सभी कथा-व्यास पूज्य श्रीबाबामहाराज की सत्प्रेरणा से देश-विदेश में निष्काम भाव से कथामृत का दानकर समाज का उत्थान करने के परम पुनीत कार्य में संलग्न हैं |

श्रीबाबामहाराज ने आज तक अपने पास एक भी पैसा नहीं रखा; साधु बनने के पहले भी जब वे प्रयाग में रहते थे तो विद्यार्थी-जीवन में विश्वविद्यालय में अध्ययन करते समय भी कभी अपने पास पैसा नहीं रखते थे, उन्होंने कभी किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया किन्तु उनके सम्पर्क में जो कोई भी आया, उसे वे धन की आसक्ति, विषयासक्ति से सर्वथा दूर रहने की बात कहा करते थे | मानमंदिर पर श्रीबाबा के सभी अनुयायी धन, विषयभोग और यश की कामना को तिलांजलि देकर पूर्ण निष्किञ्चन भाव से धाम-धामी की आराधना में लगे हुए हैं | श्रीधाम-सेवा के बड़े-बड़े कार्य महाराजश्री ने सम्पादित किये,

जैसे- ब्रज के वन-पर्वतों की रक्षा, कुण्डों का जीर्णोद्धार और यमुनाजी को ब्रज में लाने के लिया चलाया गया यमुना-आन्दोलन इत्यादि; इन सभी ब्रजसेवा-कार्यों को करते समय बाबाश्री ने अपने अनुयायियों को यही कहा कि कार्य की सफलता के लिए एकमात्र श्रीराधारानी का ही आश्रय लो, कभी भी न तो धन का आश्रय लो, न धनी व्यक्तियों का | किसी से भी अर्थ की याचना कभी मत करो, अनीहा-वृत्ति से सेवा व निष्काम आराधना करने पर श्रीभगवत्कृपा से सब कार्य सहजतापूर्वक सम्पन्न हो जाते हैं | 'निष्काम संकीर्तन' सभी सेवा कार्यों में सफलता पाने के लिए श्रीबाबामहाराज द्वारा दिया गया मूलमन्त्र है |

महाराजश्री की 'पूर्ण निरपेक्षता' के बारे में जितना भी कहें, वह सब सूर्य को दीपक दिखाने के समान ही है ...| बाबाश्री अपने आरम्भिक दिनों में जब मानगढ़ पर निवास कर रहे थे, उस समय यह मंदिर पूर्णतया खण्डहर बन चुका था | एक बार भारत का प्रसिद्ध उद्योगपति डालमिया श्रीबाबा के पास आया और धन के मद से मदान्वित होकर उनसे बोला कि यदि आपकी इच्छा हो तो मैं इस स्थान पर शानदार 'मंदिर' बनवा सकता हूँ | बाबा महाराज ने देखा कि इस व्यक्ति के मन में अपने धन का बहुत अधिक अभिमान है, अतः उसके अहंकार को नष्ट करने के लिए उन्होंने कहा – 'तुम्हारे पैसे को तो मानमन्दिर का एक कुत्ता तक देखेगा भी नहीं | मैं तो यहाँ वैराग्य-वृत्ति से जीवनयापन कर रहा हूँ, अतः हमारे ठाकुरजी जीर्ण-शीर्ण झोपड़ी में रहें, इसी में उनकी शोभा है, उनके लिए किसी भव्य मंदिर की कोई आवश्यकता नहीं है |' श्रीबाबामहाराज के भक्तिमय निर्भीक वचन सुनकर डालमिया का गर्व ठण्डा पड़ गया और वह मानमंदिर से चला गया | कई बार भक्तों की इच्छा हुई कि मानगढ़ पर एक भव्य सुन्दर मंदिर का निर्माण हो; एक बार तो मुम्बई के कुछ श्रद्धालु भक्तों ने स्वयं ही इसके लिए धन का संग्रह किया, इंजीनियरों के द्वारा मंदिर का नक्शा और नवीन प्रारूप तैयार किया गया परन्तु श्रीबाबामहाराज नवीन मंदिर के निर्माण-कार्य के लिए सहमत नहीं हुए; उस समय श्रीबाबा की प्रेरणा से मानमंदिर के संत पूर्ण निष्काम भाव से ब्रजवासियों की मधुकरी माँगकर ब्रज के हजारों गाँवों में भगवन्नाम प्रचार कर रहे थे, अतः महाराजश्री ने कहा कि धन का उपयोग 'ईंट-पत्थर का मंदिर-निर्माण' में करने की अपेक्षा मैं चाहता हूँ कि लोगों के हृदय में मंदिर बने अर्थात् श्रीभगवन्नाम-संकीर्तन के द्वारा अन्तःकरण पवित्र होकर श्रीइष्ट के रहने योग्य मन-मंदिर बन जाए और उसका उपाय यही है कि गाँव-गाँव में भगवन्नाम का प्रचार किया जाए, इसलिए धन का सदुपयोग तो श्रीहरिनाम-प्रचार-कार्य के लिए ही किया जाए ...|

'श्रीयमुना महारानी' आज ब्रज में नहीं हैं, हरियाणा में हथनीकुण्ड बैराज बनाकर यमुनोत्री से ब्रज की ओर प्रवाहित होने वाले शुद्ध यमुना जल को वहीं रोक लिया गया है; इस दुर्दशा को देखते हुए श्रीबाबा के द्वारा 'श्रीयमुनाजी' को ब्रज में लाने के लिए व्यापक 'यमुना-आन्दोलन' चलाया गया, ब्रज से दिल्ली तक हजारों यमुना-भक्तों ने कई बार विशाल पदयात्रायें कीं | इससे पूरे देश में अभूतपूर्व जनजागृति हुई और भारतसरकार तक के होश उड़ गए | इस विशाल 'यमुना आन्दोलन' का सञ्चालन करने वाले मानमंदिर के व्यस्थापकों को बाबा महाराज की यही सलाह थी कि किसी से धन की याचना मत करना, जीवाश्रय मत लेना और नेतृत्त्व की भी स्वयं इच्छा मत करना, अपने नाम-यश (मान-सम्मान) की कामना से बिलकुल दूर रहना | बाबाश्री ने यहाँ तक कहा

कि स्वयं मंच पर भाषण करने के लिए माइक पर मत बोलो, बाहर से आये लोगों को इसका अवसर दो | मीडिया वाले आयें तो कैमरे के सामने फोटो खिंचाने के लिए मत खड़े होना | दीनतापूर्वक, अपने नाम-यश की कामना से रहित होकर 'यमुना आन्दोलन' का सञ्चालन करोगे तो अवश्य सफलता मिलेगी | श्रीबाबा की आज्ञा का पूर्णतया पालन करते हुए मानमंदिर के व्यस्थापकों ने ब्रज से दिल्ली तक चलाई गई विशाल 'यमुना पदयात्रा' में नेतृत्त्व स्वयं न करते हुए वृन्दावन और गुजरात से पधारे संतों को यह उत्तरदायित्त्व सौंपा, मंच पर भाषण करने के लिए भी स्वयं आगे न आकर वृन्दावन के संतों को ही मंच सञ्चालन का कार्य सौंप दिया तथा मीडिया वालों के सामने भी स्वयं आगे न आकर वृन्दावन और गुजरात से आये संतों को आगे किया | इसका यह परिणाम हुआ कि इस यमुना-यात्रा में दूर-दूर से पधारे सभी सम्प्रदायों के वैष्णवजन और उनके आचार्य अत्यधिक उत्साह के साथ 'यमुना आन्दोलन' में सम्मिलित रहे, सभी के मध्य परस्पर पूर्ण सौहार्द्र और प्रेम भाव बना रहा, अभूतपूर्व एकता देखने को मिली और किसी प्रकार का आपसी वैमनस्य व भेदभाव देखने को नहीं मिला जैसा कि हिन्दू-समाज में होना बहुत अधिक कठिन कार्य है | 'यमुना यात्रा' के बाद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अध्यक्ष 'श्रीमोहनभागवतजी' भी एक बार श्रीबाबा का दर्शन करने के लिए मानगढ़ पधारे; उनके समक्ष श्रीबाबा ने 'गर्गसंहिता' से विस्तारपूर्वक यमुनाजी का माहात्म्य वर्णन किया और अत्यन्त निर्भीकतापूर्वक यह भी कह दिया कि यमुनाजी न तो मेरे प्रयास से ब्रज में आयेंगीं, न ही आप उन्हें ब्रज में ला सकते हैं और न ही प्रधानमंत्री मोदीजी इत्यादि ... | 'श्रीयमुनाजी' तो एकमात्र 'श्रीराधारानी' की कृपा से ही ब्रजभूमि में आयेंगी और हमलोग इसीलिए उन्हीं की पूर्ण कृपा पर निर्भर रहते हुए केवल उनकी प्रसन्नता हेतु 'गुणगानमयी सरस आराधना' में ही सदा संलग्न रहते हैं ...|

इस प्रकार से श्रीबाबामहाराज की पूर्णतः अनपेक्ष-वृत्ति के कुछ ही संक्षिप्त उदाहरण दिए; जिनसे प्रेरणा लेकर जीवाश्रय का सर्वथा त्यागकर एकमात्र श्रीजी की कृपा का आश्रय लेते हुए उन्हीं की आराधना करने का लक्ष्य बनाना है | श्रीबाबामहाराज लगभग ७० वर्षों से अखण्ड ब्रजवास कर रहे हैं और धाम-सेवा, यमुनाजी की सेवा, गौमाता की सेवा तथा जनकल्याणकारी कार्यों को करते हुए उन्हें जो सफलता प्राप्त हुई है, उसका मूल आधार यही है कि वे भागवत के सिद्धांत के अनुसार पूर्ण अनीहा-वृत्ति से सर्वथा निरपेक्ष भावपूर्वक जीवनयापन करते हुए केवल 'श्रीराधारानी की आराधना' में ही नित्य निमग्न रहते हैं | बाबाश्री सभी सेवा-कार्यों में सफलता का श्रेय 'श्रीआराधना-शक्ति' को ही देते हुए कहते हैं कि यदि हम लोग नित्य निष्ठापूर्वक 'श्रीभगवान् की आराधना' करें तो असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है, 'आराधना' में अनन्त शक्ति है |

अपबल तपबल और बाहुबल, चौथो बल है दाम |
सूर किसोर कृपा ते सब बल, हारे को हरिनाम ||

इस प्रकार अनपेक्ष (अकिञ्चन) भक्तजन ही अखण्ड आराधना करते हैं |

जब प्रभु कृपा करते हैं तो धन आदि देने से पहले 'मैं-मेरा' की वृत्ति हटा देते हैं। प्रभु ने सुदामा जी को धन तो दिया परन्तु देने से पहले उनमें 'मेरा-तेरा' की भावना बिल्कुल खत्म कर दी। भगवान् अपने भक्त का सदा भला चाहते हैं। नारद जी ने भगवान् को नारी-विरह का श्राप दिया परन्तु भगवान् ने नारद जी का कल्याण ही किया, उन पर रुष्ट नहीं हुए।

‘श्रीराधा संगीत विद्यालय’ की सुव्यवस्थापिका ‘श्रीजी व मुरलिकाजी’

ब्रज की परम विभूति श्रद्धेय श्रीरमेशबाबाजीमहाराज द्वारा मानमन्दिर में ‘श्रीराधा संगीत विद्यालय’ की स्थापना की गई है | श्रीराधामाधव की ‘नित्य आराधना’ को और अधिक रसमयी, सर्व जीवजगत-कल्याणकारी और सर्वग्राह्य बनाने के उद्देश्य से इस विद्यालय में संगीत के त्रिविध अंगों ‘गायन, वादन और नृत्य’ का प्रशिक्षण दिया जा रहा है | शास्त्रीय संगीत के प्रशिक्षण हेतु यह भारत का अद्वितीय विद्यालय है, जिसमें निष्काम भाव से और केवल विशुद्ध भक्ति के प्रचार के उद्देश्य से ‘संगीत-विद्या’ प्रदान की जा रही है | इस संगीत विद्यालय की व्यवस्थापिका हैं मानमन्दिर सेवा संस्थान की अति निःस्पृह भागवत वक्त्री परम साध्वी मुरलिकाजी और उनकी अनुजा (छोटी बहन) साध्वी श्रीजी |

श्रीमुरलिकाजी और श्रीजी का जन्म भगवान् श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति श्रीराधारानी की नित्य लीलाभूमि बरसाना में, उनके करकमलों द्वारा निर्मित गह्वरवन में स्थित ‘श्रीराधारसमन्दिर’ में परम वैष्णव ब्रजवासी परिवार में हुआ है; यह सम्पूर्ण परिवार ही पूज्य श्रीबाबामहाराज के शरणागत है और उन्हीं के मार्गदर्शन में विशुद्ध भक्ति के पथ पर अग्रसर है | मुरलिकाजी की दादी पूज्या श्रीमती ‘यमुना देवी’ एक आदर्श ब्रजवासिनी थीं, उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन साधु-संतों और अतिथि-अभ्यागतों की सेवा में समर्पित कर दिया था, उन्होंने घोर आर्थिक विपन्नता की स्थिति में संतों-वैष्णवों की भोजनप्रसाद-सेवा प्रारम्भ की थी, जो आज तक अनवरत् सुचारु रूप से चल रही है, उनके आवास-स्थल श्रीराधा रस मंदिर में प्रतिदिन हजारों वैष्णवजन भोजन-प्रसाद ग्रहण करते हैं; यह सेवा पूर्णतया निःशुल्क है | मुरलिकाजी के ताऊजी डॉ. रामजीलालशास्त्रीजी भी पूर्णतया श्रीबाबामहाराज के शरणागत हैं और उन्होंने महाराजश्री के

द्वारा श्रीमद्भागवत का अध्ययन किया एवं उनकी आज्ञा से देश-विदेश में श्रीमद्भागवत-कथा का निष्काम भाव से प्रचार-प्रसार कर रहे हैं | ऐसे विशुद्ध भक्त-परिवार में जन्म होने के कारण साध्वी मुरलिकाजी और श्रीजी को बचपन से ही विरासत के रूप में भक्ति की प्राप्ति हुई और बचपन से ही उन्हें पूज्य श्रीबाबामहाराज जैसे परम निष्किञ्चन महापुरुष का सानिध्य उपलब्ध हुआ, जो देवताओं को भी दुर्लभ है | औपचारिक रूप से स्कूली-शिक्षा प्राप्त करने के साथ ही इन्हें प्रमुख रूप से श्रीबाबामहाराज के द्वारा आध्यात्मिक-ज्ञान की प्राप्ति हुई | स्कूली-शिक्षा जो कि गर्दभी के दुग्ध के समान अत्यन्त हेय और दूषित है, उसको शीघ्र ही समाप्त कर इन दोनों बहनों ने श्रीबाबामहाराज के द्वारा गीता, श्रीमद्भागवत, रामायण और अन्य वैष्णव-ग्रन्थों का अध्ययन किया | आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने के पूर्व श्रीबाबामहाराज ने मुरलिकाजी और श्रीजी को शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रदान की | संगीत का अनेकों वर्षों का कोर्स श्रीबाबा ने कुछ महीनों में ही पूर्ण करा दिया और इस तरह ये दोनों बहनें श्रीबाबा के मार्गदर्शन में संगीत-विद्या में पूर्ण पारंगत हो गयीं | अतः संगीत-कला में पूर्ण दक्षता प्राप्त इन दोनों बहनों को श्रीबाबा ने ‘राधा संगीत विद्यालय’ के प्रबन्धन का कार्य सौंप दिया है |

साध्वी मुरलिकाजी को श्रीमद्भागवत और अन्य वैदिक साहित्य का ज्ञान प्रदान करने के उपरान्त श्रीबाबा ने इन्हें देश-विदेश में पूर्णतया निष्काम भाव से श्रीमद्भागवत कथा के माध्यम से विशुद्ध भक्ति के प्रचार-प्रसार करने का आदेश दिया | वर्तमानकालीन भारतवर्ष में श्रीमद्भागवत-कथा को धनोपार्जन करने का प्रमुख माध्यम बना लिया गया है और बड़े दुःख की बात है कि जिस भागवत की रचना वेदव्यासजी द्वारा कलियुगी जीवों के उद्धार के लिए की गयी थी, आज उसी भागवत-कथा के द्वारा लाखों-करोड़ों रुपये की धनराशि अर्जित की जा रही है और इसका पूर्ण व्यापारीकरण कर दिया गया है; इस पतनोन्मुखी दशा से व्यथित होकर ही पूज्य श्रीबाबामहाराज के द्वारा ऐसे भागवत-व्यासों का सृजन किया गया जो पूर्णतया निष्काम भाव से त्यागवृत्ति के द्वारा भागवत-कथा का प्रचार कर देश और विश्व का वास्तविक रूप से कल्याण कर सकें, अज्ञानान्धकार में भटकते हुए जीवों को भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का उज्जवल प्रकाश प्रदान कर उनका उत्थान करें | इसी उद्देश्य से 'श्रीजी व मुरलिकाजी' को 'महाराजश्री' ने विश्व-कल्याण के मार्ग में नियुक्त कर दिया है और ये दोनों बहनें उनकी आज्ञा का पूर्णरूपेण पालन करते हुए अपने नाम (स्वयश), मान-सम्मान आदि की कामना रहित पूर्ण त्यागवृत्ति के साथ समाज-कल्याण के परम पुनीत कार्य में संलग्न हैं | साध्वी मुरलिकाजी भारतवर्ष के अनेक प्रान्तों में कथा करने के अतिरिक्त प्रतिवर्ष अमेरिका, इंगलैंड, कनाडा आदि देशों में भी भागवत-कथा करतीं हैं, उनकी सबसे बड़ी विशेषता है कि वह पूर्ण निष्किंचन भाव से कथा-वाचन करतीं हैं, धन का स्पर्श भी नहीं करतीं हैं | प्रतिवर्ष अमेरिका में कथा करने पर वहाँ के श्रद्धालु भक्तों द्वारा बिना याचना किये ही मुरलिकाजी को करोड़ों रुपये दान में दिए जाते हैं परन्तु वह इसमें से एक भी रुपया ग्रहण नहीं करतीं और सम्पूर्ण धनराशि 'मानमन्दिर सेवा संस्थान' द्वारा संचालित वार्षिकी 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' व 'श्रीमाताजी गौशाला' को भेंट कर देतीं हैं | श्रीबाबा महाराज द्वारा संचालित चालीस दिवसीय ब्रजयात्रा में प्रतिवर्ष सम्पूर्ण भारत से पन्द्रह हजार से भी अधिक यात्री सम्मिलित होते हैं और ब्रज चौरासी कोस की पूर्णतया निःशुल्क परिक्रमा करते हैं | बिना किसी याचना व स्पर्श के ही मुरलिकाजी तथा श्रीजी की कथाओं से प्राप्त सम्पूर्ण धनराशि का प्रयोग श्रीमानमन्दिर संस्थान के सेवा-कार्यों में लग जाता है, इनको पता भी नहीं रहता कि कितने रुपए आये और कितने सेवा में लगे; ये दोनों दिव्य बालिकाएँ परम निष्किञ्चन हैं; इन्होंने त्यागवृत्ति द्वारा कथा-वाचन का ऐसा अनुपम आदर्श स्थापित किया है कि अमेरिका आदि देशों में बसे भारतीय मूल के लोगों का कहना है कि अमेरिका में भारत के अनेकों संत, प्रचारक और कथा-वाचक 'भक्ति' का प्रचार कर रहे हैं किन्तु मुरलिकाजी जैसा त्याग कोई नहीं कर सका | वहाँ अन्य कथावाचक तो पहले से ही शुल्क के तौर पर लाखों-करोड़ों रुपये तय कर लेते हैं, इसके अतिरिक्त अन्य प्रचारकों के द्वारा विविध समाज-कल्याणकारी कार्यों के नाम पर भी लोगों से दान माँगा जाता है जबकि मुरलिकाजी द्वारा किसी प्रकार के दान की याचना नहीं की जाती है | मुरलिकाजी के द्वारा सम्पूर्ण त्यागवृत्ति के द्वारा देश-विदेश में कथा करने का समाज पर ऐसा प्रभाव पड़ा है कि अब श्रोतागण भी निष्काम कथावाचक और अर्थार्थी कथावाचक के भेद को समझने लगे हैं | अमेरिका में भारत के प्रख्यात कथावाचक वर्षों से भागवत कथा कर रहे थे और उनकी कथा का शुल्क कई लाख रुपये होता था | जो जितनी अधिक धनराशि लेकर कथा करता था, उसे अमेरिका में उतना ही ऊँचा कथावाचक माना जाता था परन्तु जब से मुरलिकाजी ने पूर्ण निष्काम भाव से अमेरिका में कथा करना प्रारम्भ किया तो उनके पूर्णतः त्याग, परम वैदुष्य, विशुद्ध भक्तिमय कथन व आचरण का वहाँ के समाज पर ऐसा प्रभाव पड़ा है कि लोग समझ गये कि वास्तव में सच्चा कथावाचक तो वही है जो धन के लोभ से कथा न

कहकर एकमात्र विशुद्ध भक्ति के लक्ष्य से ही कहता है, जिसकी कथनी-करनी में एकरूपता है अर्थात् जिसका साक्षात् श्रीभागवतमय ही जीवन है | ब्रजबालिका श्रीमुरलिकाजी की वास्तविक भक्तिमय वाणी का यह प्रभाव पड़ा कि भारत के बहुत से प्रसिद्ध कथावाचक जो कई वर्षों से अमेरिका में अत्यधिक शुल्क लेकर कथा करते थे, उनके इस व्यापारीकरण पर अंकुश लग गया, आध्यात्मिक-समाज में एक नई जाग्रति हुई और उन धन-लोलुप कथावाचकों की कथाओं के कार्यक्रमों में बहुत कमी आ गयी, लोगों ने अमेरिका में व्यापारिक कथावाचकों की गति पर विराम लगा दिया |

एक बार श्रीमुरलिकाजी के अमेरिका-प्रवास के दौरान वहाँ के एक अत्यधिक धनाढ्य भारतीय उद्योगपति ने साध्वीजी को अपने आवास पर आमन्त्रित किया, उन उद्योगपतिजी का सदन भरपूर वैभव और सुख-सुविधाओं से सम्पन्न था, उनके पास अत्याधुनिक तकनीकी से युक्त बहुत-सी विलासितापूर्ण गाड़ियाँ थीं परन्तु इन अद्भुत विलासितापूर्ण सामग्रियों के प्रति मुरलिकाजी का चित्त तनिक भी आकर्षित नहीं हुआ और वे वहाँ भी पूर्ण निष्किञ्चनभाव में स्थित बनीं रहीं | ये उद्योगपतिजी भारत के प्रसिद्ध संत श्रीरविशंकरजी के शिष्य थे | प्रायः जो धनी व्यक्ति होते हैं, वे किसी संत-महापुरुष, धार्मिक व्यक्ति अथवा अपने गुरुदेव के भी सम्पर्क में आते हैं तो यह देखते हैं कि मेरी धन-सम्पत्ति का इनके ऊपर प्रभाव पड़ रहा है कि नहीं और यदि उन्हें यह प्रतीत होता है कि यह आध्यात्मिक व्यक्ति मेरे धन-वैभव से प्रभावित हो रहा है, उसके प्रति झुकाव हो रहा है तो वह उस आध्यात्मिक व्यक्ति, यहाँ तक कि अपने गुरुदेव के भी ऊपर स्वयं हावी होने का प्रयास करता है, अपनी बात उनसे मनवाना चाहता है | मुरलिकाजी की पूर्णतः निष्किञ्चनवृत्ति का इन अमेरिकावासी उद्योगपति के ऊपर ऐसा विलक्षण प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपने गुरुदेव श्रीरविशंकरजी को अमेरिका में आमन्त्रित किया और एक भव्य समारोह का आयोजन किया; वहाँ गुरुदेव के द्वारा साध्वी मुरलिकाजी को चादर ओढ़ाकर सम्मान किया गया |

इसी प्रकार एकबार भारतवर्ष में 'गीताप्रेस' वालों के द्वारा गोरखपुर में गीताप्रेस के यशस्वी संपादक भाईजी श्रीहनुमानप्रसादपोद्दारजी का जन्म-शताब्दी-समारोह मनाया गया; उस अवसर पर उन्होंने गीताप्रेस के भवन में भारत के प्रसिद्ध विद्वान कथावाचकों, संतों को कथा के लिए निमंत्रित किया | 'श्रीब्रजभूमि' से उन्होंने पूज्य श्रीबाबामहाराज को समारोह में सम्मिलित होने का निमन्त्रण भेजा | बाबाश्री 'ब्रज' के बाहर नहीं जाते हैं, अतः उन्होंने मुरलिकाजी को अपने प्रतिनिधि के रूप में गोरखपुर भेजा | उस समारोह में अधिकतर वक्ता पुरुष थे | मुरलिकाजी की आयु उस समय बीस वर्ष से भी कम थी, ऐसी स्थिति में 'एक कन्या के द्वारा व्यासगद्दी पर विराजमान होकर व्याख्यान देना' वहाँ के आयोजकों को उचित नहीं प्रतीत हुआ और एक तरह से उनके द्वारा साध्वीजी की उपेक्षा भी की गयी परन्तु मुरलिकाजी ने वहाँ 'श्रीमद्भागवत' की ऐसी रसमयी और अद्भुत वैदुष्यपूर्ण कथा-सरिता को प्रवाहित किया कि सभी लोग अत्यधिक आश्चर्यचकित होकर मन्त्रमुग्ध से रह गये | गीताप्रेस के सदस्यों ने भी 'श्रीमद्भागवतजी' की ऐसी परम रसमयी और विशेष तात्त्विक-व्याख्या कभी नहीं सुनी थी | अंत में वहाँ के आयोजकों के द्वारा ब्रजबालिका मुरलिकाजी का बहुत अधिक सम्मान किया गया और उन्हें गीताप्रेस से प्रकाशित बहुत-सी दिव्य पुस्तकें भेंट में प्रदान की गयीं |

ब्रजबालिका मुरलिकाजी ने श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से दो खण्डों में 'रसीली ब्रजयात्रा' नामक ग्रन्थ की भी रचना की है | पहले खण्ड में विस्तार से चौरासी कोस ब्रज की आन्तरिक लीलास्थलियों का उल्लेख किया गया है तथा दूसरे खण्ड में चौरासी कोस से भी अधिक विस्तृत बृहद् ब्रज की लीलास्थलियों का शास्त्रीय प्रमाण के आधार पर वर्णन किया गया है | 'श्रीब्रजभूमि' के बारे में प्रमाणों सहित विस्तारपूर्वक लिखित किसी ग्रन्थ का

आज तक सर्वथा अभाव था और चौरासी कोस से भी अधिक विशाल भूभाग पर फैले बृहद् ब्रज के बारे में प्रायः किसी को कोई ज्ञान नहीं था परन्तु श्रीबाबामहाराज के द्वारा अनेकों प्रामाणिक ग्रन्थों का अध्ययन और ब्रज का व्यापक रूप से अनुसन्धान किये जाने पर जो शास्त्रीय प्रमाण उपलब्ध हुए उन्हीं के आधार पर श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से मुरलिकाजी ने ब्रज के बारे में दो खण्डों में ग्रन्थ 'रसीली ब्रजयात्रा' का सृजन किया | ब्रज के बारे में इतना अधिक प्रामाणिक और विस्तृत वर्णन आधुनिक कालीन किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं मिलता है |

श्रीमुरलिकाजी के ही पदचिन्हों पर इनकी छोटी बहन बालसाध्वी श्रीजी भी चल रहीं हैं | अपनी बड़ी बहन की तरह इन्हें भी बचपन से ही श्रीबाबामहाराज का सान्निध्य प्राप्त हुआ और उन्हीं के द्वारा शास्त्रीय संगीत और श्रीमद्भागवत की भी शिक्षा प्राप्त हुई | 'श्रीजी' को भी पूज्यश्रीबाबा के द्वारा निष्काम भाव से देश-विदेश में भागवत-कथा के प्रचार-प्रसार की आज्ञा मिली और तब से वे भी अपनी बड़ी बहन की तरह भारत के अलावा विदेश में भी कथावाचन करती हैं | इन्होंने फिजी और ऑस्ट्रेलिया में भागवत-कथा की रसधारा को प्रवाहित करते हुए वहाँ बसे अनेकों भारतीय मूल के लोगों के हृदय में निष्काम भक्ति का बीजारोपण किया | श्रीजी का जीवन भी पूर्ण त्यागमयीवृत्ति पर आधारित है | कथा में अयाचित रूप से जो धन आता है, वह बिना स्पर्श किए ही मानमंदिर द्वारा संचालित माताजी गौशाला में गौसेवा हेतु व अन्य ब्रजसेवा-कार्यों में समर्पित कर दिया जाता है | दो वर्ष पूर्व श्रीजी की ऑस्ट्रेलिया में कथा हुई तो कथा के आयोजकों ने १७ लाख रुपये दान में भेंट किये परन्तु इन्होंने एक भी रुपया ग्रहण नहीं किया और बहुत आग्रह किये जाने पर भी १७ लाख रुपये वहीं छोड़कर 'भारत' में वापस आ गयीं; इनकी इस त्यागवृत्ति का प्रभाव कथा के आयोजकों पर ऐसा पड़ा कि वे लोग १७ लाख रुपये लेकर 'बरसाना' आये और श्रीबाबामहाराज से उस धन को ग्रहण करने का अनुरोध किया | महाराजश्री की प्रेरणा से उस धन को 'श्रीमाताजी गौशाला' में गौमाता की सेवा हेतु भेंट कर दिया गया | इन दिव्य देवियों ने अपनी कथाओं में जिस त्यागवृत्ति का अनुपम आदर्श स्थापित किया है, ऐसा त्याग वर्तमानकाल के बड़े-बड़े साधुओं के जीवन में भी देखने को नहीं मिलता है | भोगैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा आदि समस्त प्रकार की एषणाओं का इन दिव्यतम बालिकाओं ने पूर्णरूपेण त्याग कर दिया है | धन की तृष्णा का पूर्ण त्याग करने के साथ ही लोकैषणा का भी इन आराधिकाओं के जीवन में सर्वथा अभाव है | विशाल धनराशि का त्याग करने और बड़े-बड़े समाज के कल्याणकारी कार्यों को करने पर भी इनके मन में अपने नाम-यश की तनिक भी लिप्सा नहीं है | श्रीमानमंदिर में इस समय सवा सौ कन्याएँ श्रीबाबामहाराज के वात्सल्यपूर्ण मार्गदर्शन में पूर्णतः त्यागवृत्ति के साथ विशुद्ध भक्तिमय जीवन व्यतीत कर रहीं हैं | इन श्रीकृष्णाराधिकाओं का आदर्श जीवन बड़े-बड़े साधु-संतों और अध्यात्मपथ के साधकों के लिए परम प्रेरणादायी और अनुकरणीय है | परम साध्वी मुरलिकाजी और श्रीजी अपने अद्भुत त्याग और परम संयमित विशुद्ध भक्तिमय आचरणों व उपदेश के द्वारा मानमंदिर की इन दिव्य आराधिकाओं को भक्तिपथ पर अग्रसर होने में सतत सहायता कर रही हैं | ये दोनों परमादर्श बहनें मानमन्दिर की साधिकाओं को असली आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने के साथ ही 'श्रीराधा संगीत विद्यालय' की व्यवस्थापिका होने के कारण शास्त्रीय संगीत का भी प्रशिक्षण दे रही हैं, इनके परमाद्भुत मार्गदर्शन में मानमन्दिर की दिव्य साध्वियाँ निष्काम कथा वक्त्री बनकर पतनोन्मुख जीव-जगत का परम कल्याण करने के लिए परम त्याग, वैराग्यमयी रहनी से सतत परम मंगलकारी साधन (कथा-कीर्तन सीखने की तैयारी) में लगी हुई हैं | श्रीबाबामहाराज की हार्दिक इच्छा थी कि संसार में श्रीराधारानी का यश प्रसरित हो, जिसे सुनकर लोग श्रीराधामय बन जाएँ | अब श्रीजी की सहचरी स्वरूपा इन दिव्य देवियों के द्वारा 'श्रीराधायशगान' से अवश्य ही सम्पूर्ण सृष्टि का परम मंगल होगा...|

श्रीसूरदासजीमहाराज ने अपने एक पद में भविष्यवाणी की है

– संवत दो हजार के ऊपर, ऐसा जोग परै |
सहस्र वर्ष लगि सतयुग व्यापै, धर्म की बेल बढ़ै ||

इस कलिकाल में संवत् २००० के बाद लगभग एक हजार साल तक सतयुग जैसा समय आयेगा और चारों ओर विशुद्ध भक्ति की सुगन्ध फैलेगी | अब ऐसा प्रतीत हो रहा है कि परम भक्तवत्सल श्रीभगवान् अपने प्रेमी भक्तों की वाणी को सत्य करने के लिए अवश्य ही विशुद्ध सत्त्व प्रधान समय (भक्तिमय काल) की भूमिका बना रहे हैं | श्रीराधिकारानी की असीम अनुकम्पा से अवतरितधाम श्रीगह्वरवन के श्रीमानभवन में 'श्रीराधारानी व उनकी सखी-सहचरियाँ' ही परमपूज्य श्रीबाबामहाराज व इन दिव्य बालिकाओं के रूप में अनेकों स्वरूप धारण कर प्रकट-लीला कर रही हैं, जिन परमपावनकारी लीलाओं से चराचर जीवों का परम कल्याण व मंगल हो रहा है | श्रीकरुणामयी के कृपाभाजनजनों को ही इसका अनुभव हो रहा होगा .....जय श्री राधे |

प्रेम की पाठशाला 'श्रीब्रजभूमि'

जब से श्रीकृष्ण ब्रज से आये हैं मथुरा में, तब से चित्त बड़ा विक्षिप्त-सा रहता है, मन बड़ा उदास रहता है, दिन भर रुदन किया करते हैं, रोते रहते हैं | उद्धवजी महाराज प्रभु के प्रिय सखा हैं, उनके मंत्री भी हैं | भगवान ने विचार किया कि उद्धवजी ज्ञानी तो बहुत हैं, साक्षात् देवगुरु बृहस्पतिजी के शिष्य हैं, ज्ञान में तो कोई कमी नहीं है लेकिन अभी उद्धवजी का ज्ञान बिना प्रेम के शुष्क है, नीरस है, या ज्ञान को लाभ नहीं है | तो भगवान कृष्ण सोचने लगे कि उद्धवजीमहाराज को मैं कहाँ भेजूँ, ऐसी कौन-सी पाठशाला में भेजूँ, जहाँ से उद्धव एकदम प्रेम की शिक्षा प्राप्त करके प्रेम से परिपूर्ण होकर आवें | श्रीभगवान ने विचार किया उद्धव जी महाराज को प्रेम की शिक्षा दिलाने के लिये ब्रजभूमि ही सर्वोत्तम प्रेम की पाठशाला है... क्योंकि भूखा अपनी भूख स्वयं नहीं मिटा सकता... (भूखा अपना ही पेट नहीं भर पा रहा है... दूसरे का क्या पेट भरेगा?) तो जो 'ब्रजगोपियाँ' जिनका प्रेम से हृदय भरा हुआ है... जिनका अंत:करण प्रेम से पूर्णतया परिपूर्ण ही... एकदम प्रेम से भरी हुई है... उन्हीं प्रेम की आचार्या ब्रजगोपियों के पास यदि उद्धव जी को भेजा जाय, तो अवश्य ही जब उद्धव जी महाराज का ज्ञान सरस हो जाएगा, ये ज्ञान बढ़िया हो जाएगा | अब भगवान ने उद्धव जी को ब्रजगमन करने के लिये कहा |

प्राय: 'श्रीकृष्ण' मथुरा में रोया करते – 'उधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं' उद्धव जी शिक्षा देते कि प्रभु ! आप क्या कह रहे हो? आप लोगों को तो सिखाते हो कि मोह नहीं करना चाहिए, मोहग्रस्त नहीं होना चाहिए... और आपको कैसे विकट मोह ने घेर लिया, आप स्वयं मोहग्रस्त हो गये | मैंने कभी आपको रोते नहीं देखा, अब आप ऐसे रो रहे हैं कि अश्रुधारा रोके नहीं रूकती है |

उद्धव जी महाराज के साथ एक दिन श्यामसुन्दर यमुना-तट पर घूमने के लिये गये, जैसे ही यमुना जी के उस नीले प्रवाह को देखा तो श्यामसुन्दर पादुका उतारकर यमुना जी को प्रणाम किये हैं... यमुना जी को देखकर रोने लग गये कि देखो ये वही यमुना है – **"युवयो: वक्त्र संजाता केलि श्रम कणा: शुभा |"** (सनत्कुमारसंहिता)

जब मैंने राधारानी के साथ विहार किया, उनके साथ अन्तरंग लीलाएँ की, तो उस समय श्रीजी और श्यामसुन्दर के मुख पर जो स्वेद-बिंदु आ गये, जो पसीने के कण-बिन्दु आ गए, सब सखियों ने प्रार्थना किया कि हे प्रभु ! ये आपके शरीर पर जो लीलाविहार का श्रम-बिंदु है, ये श्रम-बिंदु हमें पीवै कूँ मिल जाए, आप ऐसौ कोई उपाय करो, तो लीलाकाल के श्री कृष्ण की स्वेद बिन्दु ही राधारानी और श्यामसुन्दर ने सखीगणन कूं पीवे योग्य बनाने के लिये श्रम-बिन्दुओं को ही यमुनाजी के रूप में परिणित किया | अत: श्रीराधामाधव के लीलाविहारकाल के श्रम-स्वेत-बिन्दु ही श्रीयमुनाजी के रूप में ही प्रवाहित हो रहे हैं अर्थात श्रीराधामाधव का प्रेम-प्रवाह ही श्रीयमुनाजी के रूप में बह रहा हैं; उस यमुनाजी को देखकर श्यामसुन्दर स्वयं को रोक नही पाये बड़ी जोर-जोर से वहाँ रुदन किया, जब रोने लग गये तो उद्धवजी

महाराज ने समझाया कि हे प्रभु ! आप ऐसा रुदन क्यों कर रहे हैं |

श्रीयमुनाजी (कालिंदी) श्रीकृष्ण की चतुर्थ पटरानी हैं | श्रीयमुना जी को देखकर श्रीकृष्ण को श्रीराधारानी की याद आ गई | श्रीवल्लभकुल में आज भी श्रीयमुनाजी की श्रीराधारानी के रूप में उपासना की जाती है, वहाँ "श्रीश्यामसुन्दर यमुना महारानी" कहते हैं |

अब श्रीजी की आन्तरिक लीलाओं को वहाँ श्रीभगवान् ने उद्धवजी को बताया और भूमिष्ट होकर बोले, भूमि पर अपना मस्तक लगाकर, हाथ जोड़कर श्रीजी से प्रार्थना करने लगे कि स्वामिनी जू ! हमसे ऐसो कौन-सो अपराध ह्वै गयौ है, जाके कारण आपने मुझे ब्रज के बाहर निकाल दियौ है, श्यामसुन्दर बार-बार श्रीराधारानी से प्रार्थना करते हैं –

हे वृषभानु सुते ललिते !
हम कौन कियौ अपराध तिहारौ |
काढ़ दियौ ब्रजमण्डल सों,
कछु औरहु दण्ड रह्यौ अति भारौ |
आपुन जानि दया की निधान,
भई सो भई अब बेगि निवारौ |
देहु सदा ब्रज कौ बसिवौ,
वह कुंज कुटी यमुना कौ किनारौ ||

श्रीजी से प्रार्थना किया श्यामसुन्दर ने कि मुझसे कौन-सा अपराध हो गया कि आपने सदा सदा के लिये ब्रज से बाहर कर दिया, हे स्वामिनी जू ! अब कृपा करो, पुन: हमें ब्रज में बुलाओ... श्यामसुन्दर रोने लगे...

उद्धव जी महाराज ने सँभाला श्यामसुन्दर को – प्रभु ! आप इतना रुदन क्यों करते हैं?

श्यामसुन्दर बोले – उद्धव ! यदि गोपीजन रोना बंद कर दें तो मेरा भी रोना बंद हो जाएगा और यदि वे रोती रहीं, मैं भी रोता ही रहूँगा –

क्योंकि **"ये यथा मां प्रपद्यन्ते, तांस्तथैव भजाम्यहम् |"** ब्रजगोपियाँ यदि मुझे रो-रोकर याद करती हैं तो मेरा भी रो-रोकर स्मरण करना स्वाभाविक ही है |

उद्धवजी महाराज तो अपने ब्रह्मज्ञान में डूबे हुए सोच रहे हैं कि यदि मैं एकबार 'ब्रज' में चला जाऊँ तो इन गोपियों का रोना-धोना सब बन्द हो जाए और गोपियों का रोना बन्द हुआ तो कृष्ण का अपने आप रोना बन्द हो जाएगा |

उद्धवजी ने श्रीकृष्ण से आज्ञा माँगी – "हे प्रभु ! मैं एक बार ब्रज जाकर इन्हें ब्रह्मविद्या से संतुष्ट कर आऊँ, अगर ये रोना बन्द कर देंगी, तो आप तो नहीं रोयेंगे |"

श्रीकृष्ण – "उद्धव ! मैं फिर बिलकुल नहीं रोऊँगा, अगर ब्रजवासी रोना बन्द कर देंगे |"

उद्धवजीमहाराज 'ब्रज' जाने को तैयार हुए, श्यामसुन्दर ने जाते-जाते अपना पीताम्बर दिया – उद्धव ! ये पीताम्बर लेते जाओ, ये मेरा उत्तरीय लेते जाओ, ये मेरी वनमाला लेते जाओ, इनको धारण करके ही ब्रज में जाना, क्योंकि यदि तुम मेरा उत्तरीय धारण करके नहीं गये, तो ब्रजवासी तुमसे बात भी नहीं करेंगे, ये ब्रजवासी ब्रह्मज्ञानियों, वेदान्तियों से बात नहीं करते | यदि तुम मेरा उत्तरीय धारण करके जाओगे तो वे सोचेंगे – लगता है कोई कृष्ण का परिचित है, उनका कोई घनिष्ट सम्बन्धी है, तो ये ब्रजवासी तुमसे बात करेंगे, श्रीकृष्ण की आज्ञा से उनके वचनानुसार ही उद्धवजी ने ब्रजयात्रा की है ...|

भगवान् कहते हैं कि अगर तुम इतने बड़े पापी भी हो कि विश्व द्रोह करके आये हो, परन्तु यदि तुम मेरी शरण में आ जाओ तो तुरन्त उसी समय क्षमा कर दिये जाओगे । भगवान् इतने बड़े क्षमाशील हैं कि तुम जैसे भी हो यदि भगवान् की शरण में आ गये तो जैसे लोहा पारस के स्पर्श से सोना बन जाता है वैसे ही तुम भी उसी समय सोना बन जाओगे अर्थात् तुम्हारे सब पाप नष्ट हो जाएँगे ।

कृष्णप्रेमी ही परम निष्किञ्चन

बाबाश्री के प्रातःकालीन सत्संग (३/८/२०२१) से संकलित

भगवान् श्रीकृष्ण ने चीरहरण के प्रसंग में गोपियों से कहा था – **न मय्यावेशितधियां कामः कामाय कल्पते |**
भर्जिता क्वथिता धाना प्रायो बीजाय नेष्यते ||
(श्रीभागवतजी १०/२२/२६)

हे देवियो ! जैसे चना, जौ या गेंहू को भूँज दो, उबाल दो और फिर उसको बोओ तो उसमें से अंकुर नहीं निकलेगा, उसमें चाहे कितनी भी खाद लगाओ, पानी दो किन्तु उसमें अंकुर कभी नहीं निकलेगा | इसी प्रकार जो सच बोलता है, सच करता है, उसका बीज भुँज गया, उसमें से कभी अंकुर नहीं निकलेगा | भगवान् ने चीरहरण पहले किया और रास एक वर्ष बाद किया | जब चीरहरण किया, उस समय अनेकों गोपियाँ नग्न खड़ीं थीं, तब भगवान् ने उनके सामने यह श्लोक कहा था | भगवान् कृष्ण जैसा परम प्रेमी संसार में आज तक कोई नहीं हुआ | भगवान् 'राम' मर्यादा पुरुषोत्तम हुए हैं लेकिन कृष्ण उनसे आगे चले गये | श्रीकृष्ण ने रास-विलास किया किन्तु फिर भी वे लीला पुरुषोत्तम माने गये, सबसे बड़े माने गये क्योंकि उन्होंने यह शिक्षा दिया था कि जो मुझ कृष्ण में बुद्धि लगाएगा, उसको भोग नहीं सतायेगा | उसके हृदय में कामनायें तो होंगी, खायेगा-पियेगा किन्तु भोग की इच्छा नहीं होगी, उसके मन में भोग का स्वार्थ नहीं होगा |

ऐसा आज तक किसी ने नहीं कहा | इसलिए राम अवतार के बाद भी कृष्ण अवतार हुआ | नर लीला हुई थी किन्तु ऐसी लीला आज तक कभी नहीं हुई थी | श्रीकृष्ण ने अनन्त गोपिकाओं के साथ रास किया | रास-विलास आदि सब किया किन्तु उनमें सत्य था | ऐसा भगवान् राम में भी नहीं था | इसलिए सत्य ही सबसे बड़ी चीज है |

मैं ब्रज में आकर साधु बना | जन्म प्रयाग में हुआ | विश्वविद्यालय में पढ़ायी की | लड़कपन की अनेक कमियाँ होती हैं, वे मुझमें थीं | वे इसलिए दूर हुईं क्योंकि मैं सच बोलता हूँ जबकि मैंने कोई संयम नहीं सीखा था | अपनी कमियों को मैं सारे समाज में कह सकता हूँ और प्रायः कहता ही हूँ | इससे मेरा कोई नुकसान तो होगा नहीं | यदि कोई मेरी कमी जान लेगा तो गोली नहीं मारेगा | सत्य से शक्ति बढ़ती है | सत्य भगवान् का स्वरूप है | इसलिए सत्य सबसे बड़ा है | नोटों पर भी 'सत्यमेव जयते' लिखा रहता है | जो सच कहता है, सच करता है, वह साक्षात् भगवान् बन गया | ब्रज जैसा देश संसार में कहीं नहीं है | भगवान् ने चीरहरण लीला में सिखाया कि जो मुझमें बुद्धि लगाएगा, उसको कामेच्छा तो अवश्य होगी लेकिन स्वार्थ के लिए भोग की इच्छा नहीं होगी | भगवान् कृष्ण ने रास-विलास आदि सब क्रियायें कीं परन्तु वे सबसे बड़े पूर्ण अवतार माने गये | सब काम करने पर भी उनमें सत्य था | यही बात गाँधी जी में भी थी | राजगोपालाचारी जी राष्ट्रपति बनना चाहते थे परन्तु गाँधी जी राष्ट्रपिता बनाये गये और आज तक राष्ट्रपिता के रूप में गाँधीजी ही मान्य हैं | कितनी ही विरोधी पार्टियाँ आयीं, यहाँ तक कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी गाँधी जी के विरोध में था | संघ वालों ने ही गाँधी जी को गोली मारी और उनकी मृत्यु हो गयी | गाँधी जी का सम्बन्ध कांग्रेस पार्टी से था किन्तु वे राष्ट्रपिता माने गये | हमारे सामने १९४७ में भारत स्वतंत्र हुआ और तब यह समस्या उत्पन्न हुई कि राष्ट्रपिता किसको बनाया जाये, राष्ट्रपति किसको बनाया जाए ? दक्षिण भारत के लोगों ने प्रयास किया कि राजगोपालाचारी जी राष्ट्रपति बनें किन्तु वे नहीं बन पाए और राजेन्द्र बाबू को राष्ट्रपति बनाया गया क्योंकि वे गाँधी जी के अनुयायी थे | 'सत्य' के कारण ही गाँधी जी को राष्ट्रपति और राजेन्द्र प्रसाद जी को राष्ट्रपति बनाया गया; यह बात नेहरु जी में नहीं थी, इसीलिए नेहरु भी गाँधीजी को अपना आदर्श मानते थे | हमारे सामने यह झगड़ा हुआ कि कौन राष्ट्रपति बने, कौन राष्ट्रपिता बने ? गाँधीजी में केवल सत्य था, उनके जैसा नेता आज तक

विश्व में कोई नहीं हुआ जो यह कह दे कि मैं इतना वृद्ध हो गया हूँ परन्तु मेरे भोग के संस्कार अब तक नहीं मिटे | इस सत्य को स्वीकार करने के कारण ही उनको राष्ट्रपिता बनाया गया | राष्ट्रपति से ऊँचा होता है राष्ट्रपिता क्योंकि पति से ऊँचा होता है पिता |

मैं चाहता हूँ कि हमारे यहाँ भी सब लोग ऐसे ही सरल व निष्कपट बन जायें | चाहता हूँ किन्तु इच्छा तो भगवान् पूरी करते हैं | ब्रज में जो सेवा है ऐसी संसार में कहीं नहीं है | ब्रज के किसी भी गाँव में चले जाओ, छोटे से छोटे गाँव में चले जाओ, वहाँ साधु मिलेंगे, ब्रजवासी साधुओं को भिक्षा में रोटी देते हैं, दूध, छाछ देते हैं | इसलिए संसार में ब्रज जैसा देश न था, न है और न ही होगा | ब्रज के हर गाँव में ब्रजवासियों को भिक्षा देना कौन सिखाता है ? मैं तो भारत में घूमा हूँ | मानमन्दिर की साध्वियाँ कथा वाचन के लिए विदेशों में भी जाती हैं परन्तु सारे संसार में ब्रज जैसा देश नहीं है क्योंकि यहाँ सत्य ज्यादा है | हम सत्य बोलें, इतनी हिम्मत किसी में नहीं है | सच बोलने में, अपनी कमी बताने में कोई फाँसी नहीं लगती | मैं अपनी कमी कह रहा हूँ, मैं विश्वविद्यालय में पढ़ा, कॉलेज में पढ़ा, मुझमें अनेकों कमियाँ थीं जो मैं सारे समाज में कह सकता हूँ और कहता हूँ, सबके बीच में कहता हूँ | इसका क्या परिणाम हुआ, क्या किसी ने मुझको गोली मारी, मुझे तो कोई नुकसान नहीं हुआ बल्कि आज तक लोग ब्रज में मेरा सम्मान करते हैं | ब्रज के हर गाँव में मैंने भिक्षा माँगी है | ब्रज में ऐसा कोई गाँव नहीं है, जहाँ मैं न गया हूँ | हर गाँव में चालीसों साल तक मैंने भिक्षा माँगी और सब जगह यही देखा कि ब्रज जैसी प्रेम-भावमयी सेवा दुनिया में कहीं नहीं है, किसी देश में नहीं है; ऐसी सेवा केवल ब्रज में है | ब्रज के किसी भी गाँव में चले जाओ, भिक्षा मिलेगी | इसीलिए ब्रजवासी पूज्य माने गये, बड़े माने गये | ब्रज के छोटे से छोटे, गरीब से गरीब घर में भी चले जाओ तो ब्रजवासी रोटी देंगे | ब्रज जैसा देश संसार में न था, न है, न होगा | ब्रजवासियों का मैं सम्मान करता हूँ क्योंकि ब्रजवासी सबसे बड़े होते हैं | ब्रज के 'हर गाँव में और अधिकतर घरों में' मैं भिक्षा माँगने के लिए गया हूँ | ऐसा एक भी घर नहीं मिला जो रोटी के लिए मना कर दे | ब्रजवासी रोटी माँगने वाले को रोटी देते हैं, आटा माँगने वाले को आटा देते हैं, दूध माँगने वाले को दूध और छाछ माँगने वाले को छाछ देते हैं | इसलिए ब्रजवासी बड़ा ही पूज्य है | ब्रज जैसी सरलता, सरसता कहीं नहीं है, यही कारण है कि मैं ब्रजवासियों का सम्मान करता हूँ | पढ़ाई-लिखाई और पैसे की मानमन्दिर में आवश्यकता नहीं है | पढ़े-लिखे और पैसे वाले लोग तो यहाँ बहुत आते हैं किन्तु मैं उन लोगों का सम्मान नहीं करता हूँ; यहाँ बड़े-बड़े महन्त आते हैं, जगद्गुरु आते हैं किन्तु मैं जानता हूँ कि इन लोगों में 'सत्य' आना कठिन है | जो बड़ा बन जाता है, उसमें छिपाव अवश्य होता है | वह अपने दोषों को नहीं कह सकता क्योंकि उसके बड़प्पन में धक्का लगेगा | जो सत्य बोलता है, वह सबसे बड़ा है | दुनिया में सबसे बड़ा भगवान् है | 'सत्यमेव जयते' – सत्य की विजय होती है और विजय हुई | स्वतन्त्रता मिलने के बाद सत्ता पाने के लिए बड़ा झगड़ा हुआ | जिन्ना चाहता था कि मैं प्रधानमंत्री बनूँ और इसलिए वह अलग चला गया और पाकिस्तान बनाया | भारत में नेहरुजी को प्रधानमन्त्री बनाया गया क्योंकि गाँधी जी ने उनका समर्थन किया था, यह सब घटना मैंने आँखों से देखी, उस समय मैं छोटा था किन्तु समझता था कि देश में क्या हो रहा है और देखा कि सत्य की विजय हुई | मुसलमानों का पक्ष लेने के कारण हिन्दू लोग नाराज हो गये और इसीलिए नाथूराम गोडसे ने गाँधीजी को गोली मार दी | गाँधीजी की मृत्यु हो गयी परन्तु वे 'हे राम' कहते हुए मरे, अंत समय जो भगवान् का नाम लेता है, वह अवश्य ही मुक्त हो जाता है | दिल्ली में जहाँ राजघाट पर गाँधी जी की समाधि बनी है, वहाँ **'हे राम'** लिखा है |

मानमन्दिर में जितनी भी लड़कियाँ हैं, वे पैसा नहीं लेती हैं | वर्तमानकाल में साधु और ब्राह्मणों ने पैसा लेकर धर्म

को नष्ट किया | बड़ा आश्चर्य है कि साधु बनकर लोग पैसा लेते हैं और बैंक में जमा करते हैं | कभी भी पैसा मत रखो, ऐसे साधु बन जाओ, चाहे तुम कितने भी बड़े भोगी थे, हो और होगे किन्तु सत्य को पकड़ लो तो भगवान् की प्राप्ति हो जाएगी |

मानमन्दिर की कथा व्यास साध्वी मुरलिका जी को अमेरिका में कथा में एक करोड़ रुपये तक दिए गये किन्तु इन्होने एक पैसा अपने पास नहीं रखा | इनको जो धन दिया गया उसी से हर वर्ष निःशुल्क ब्रज यात्रा चलती रही | ये अमेरिका, कनाडा और इंगलैंड आदि देशों में कथा कर चुकी हैं | इनकी छोटी बहिन साध्वी श्रीजी भी ऑस्ट्रेलिया कथा करने गयीं तो वहाँ के लोगों ने इन्हें १७ लाख रुपये दिए | इन्होने एक पैसा छुआ तक नहीं और वहीँ सारा धन छोड़कर आ गयीं | इन दोनों बहनों ने बहुत बड़े त्याग का आदर्श स्थापित किया है | ऐसी लड़कियाँ दुनिया में कहीं नहीं हैं | मानमन्दिर द्वारा प्रति वर्ष संचालित ब्रजयात्रा पूर्णतया निःशुल्क होती है | इसमें किसी भी ब्रजयात्री से कोई पैसा नहीं लिया जाता है | मानमन्दिर पर यह कलंक नहीं है कि पैसा लेकर ब्रजयात्रा करायी जाये | भारतवर्ष से बहुत सी यात्रायें ब्रज परिक्रमा के लिए आती हैं | कुछ महाराष्ट्र और गुजरात से भी आती हैं | उन सब यात्राओं में पैसा लिया जाता है | ब्रजवासियों का मैं हृदय से सम्मान करता हूँ | ब्रजवासियों के रहते यदि मेरे सामने राष्ट्रपति भी आ जाये तो मैं उसका उतना सम्मान नहीं करूँगा जितना कि ब्रजवासियों का करूँगा | ब्रजवासियों के द्वार पर कृष्ण ने, साक्षात् भगवान् ने भी भिक्षा माँगी | रसखान जी ने गाया है – "**ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भर छाछ पे नाच नचावैं** |" गोपियाँ कहतीं थीं – 'लाला ! नाच दे, तब तुझे छाछ मिलेगी |' श्रीकृष्ण छाछ के लिए नाचा करते थे | ब्रजवासियों के सामने भगवान् इतने छोटे बन गये | 'ब्रजवासी' भगवान् से बड़ा है | भगवान् ने ब्रज के घर-घर में भिक्षा माँगी, चोरी की | ब्रजवासियों से उन्हें इतना प्रेम था | ब्रज से अत्यधिक प्रेम होने के कारण ही भगवान् होकर भी श्रीकृष्ण ने ब्रज में चोरी की, छोटी चीज 'छाछ' तक उन्होंने माँगी | कृष्णलीलाकाल में ब्रज में इतना अधिक दूध था कि यहाँ दूध की नदियाँ बहती थीं | जब से कलियुग आया है, ब्रज में गायें घट गयीं | लोग दूध के लोभ में भैंस रखते हैं | 'गायें' अब ब्रज में बहुत कम हो गयीं हैं | ब्रजवासी अब दूध बेचते हैं इसीलिए भैंस रखते हैं | पहले ब्रज में गायें ही थीं | छीत स्वामी जी ने यह पद गाया है –

आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय |
गायन में गोविन्द को बसिबो ही भावै ||

गायें श्रीकृष्ण के आगे भी चलतीं हैं, पीछे भी चलती हैं, उनके चारों ओर गायें चलती हैं, इसीलिए उन्हें गोविन्द और गोपाल कहा जाता है; पहले गायों से भरा हुआ ऐसा ब्रज था | अब तो ब्रज बदल गया है | गायें घट गयीं, ब्रजवासी अब भैंस रखने लगे हैं | गाँधी जी ने बकरी रखी थी क्योंकि बकरी के पालन में पैसा खर्च नहीं होता है | तुम गाय नहीं रख सकते हो तो बकरी रखो, लेकिन दूध को बेचो मत | आज ब्रज जैसा दुनिया में कोई देश नहीं है, जिसके हर गाँव में, घर-घर साधु भिक्षा माँगते हों | न इंगलैंड है, न अमेरिका, संसार में कोई ऐसा देश नहीं है | यहाँ भगवान् ने चीरहरण के प्रसंग में गोपियों को शिक्षा दी थी, उन्होंने कहा था कि यदि मुझ कृष्ण में तुम्हारी बुद्धि लग जाएगी तो तुम्हारे अन्दर कामना कभी नहीं आएगी | मेरे दर्शन की कामना होगी लेकिन भोग की कामना नहीं होगी जैसे अनाज को भूँज दो, उबाल दो फिर उसको खेत में बो दो तो उसमें से अंकुर नहीं निकलेगा; ऐसा ही भगवान् कृष्ण का उपासक होता है | भगवान् ने यह बात सिखाई कि मेरी ही इच्छा करो, मुझसे ही मिलो, मेरा दर्शन करो | भगवान् ने रास तक किया किन्तु उनके और गोपियों के मन में भोग की इच्छा नहीं आई, उनके मन में कोई स्वार्थ नहीं था; ऐसा संसार में कहीं नहीं है केवल ब्रज में ही ऐसी बातें चल रही हैं | पाँच हजार वर्ष पहले ब्रज जैसा था, वैसा अब नहीं है, अब तो बदल गया है | उस समय के ब्रज में हर ब्रजवासी के पास गायें थीं, खेती नहीं थी, सारा ब्रज जंगल था; अब सब जंगल कट गये | आबादी बढ़ी तो खेत बन गये | इसीलिए मानगढ़ के द्वारा गौशाला खोली गयी | आज दुनिया की सबसे बड़ी

गौशाला यहीं है, जिसमें साठ हजार से अधिक गौवंश का पालन हो रहा है, ऐसी गौशाला संसार में कहीं नहीं है | पथमेड़ा में है लेकिन अलग-अलग गाँवों में है | विश्व की सबसे बड़ी गौशाला 'बरसाना' में ही है, जहाँ न कोई चन्दा लिया जाता है, न दान माँगा जाता है | तीस लाख रुपये यहाँ प्रतिदिन गौसेवा का खर्च है जबकि यह धन किसी से माँगा नहीं जाता है | यह बड़ा आश्चर्य है कि बिना माँगे ही 'प्रभु' गौसेवा के लिए यह धन देता है | मानमन्दिर से प्रति वर्ष चालीस दिन की ब्रज चौरासी कोस की यात्रा होती है, जिसमें करोड़ों रुपये खर्च हो जाते हैं और यह पूर्णतया निःशुल्क होती है | इस यात्रा में देश-विदेश से लगभग पन्द्रह हजार यात्री सम्मिलित होते हैं, जिनके लिए भोजन, औषधि, आवास के लिए टेन्ट आदि की सभी सुविधा निःशुल्क होती है | पैसा लेने वाली यात्रा हम लोग नहीं चलाते हैं | निःस्वार्थ भाव से सेवा की मन से सोचो तो भगवान् सब पूर्ति करते हैं | यह गुण मैंने ब्रजवासियों से ही सीखा क्योंकि ब्रज के हर गाँव में मैंने भिक्षा माँगी और देखा कि ब्रजवासी बिना किसी स्वार्थ के साधु और अतिथि की सेवा करते हैं | गरीब से गरीब ब्रजवासी भी अतिथि और साधु को भोजन देता है, आटा देता है, दूध देता है, छाछ देता है | अब दूध तो ब्रज में कम हो गया क्योंकि गायें मर गयीं | पहले ब्रज में दूध बेचा नहीं जाता था | ७० साल पहले जब मैं ब्रज में आया था तो एक बार राँकोली गाँव के पहाड़ पर टहलने के लिए गया, उस समय वहाँ गायें चर रहीं थीं तब मैंने एक ग्वारिया से पूछा कि तुम गाय की घेरायी का कितना पैसा लेते हो तो उसने मुझे गाली दी और कहा कि कहीं गायों की घेराई ली जाती है ? मैंने मन में सोचा – ओह ! यह ब्रज है, यहाँ पैसा लेने पर गाली मिलती है; ऐसी स्थिति ब्रज में ७० वर्ष पहले थी | अब तो गाँव-गाँव में दूध बिकता है किन्तु अभी भी भिक्षा लेने जाओ तो ब्रजवासी दूध और छाछ देते हैं | मैं ब्रज के हर गाँवों में घूम चुका हूँ और सभी गाँवों में भिक्षा माँगी है | हर गाँव में मुझे भिक्षा मिली है और गाली भी खूब मिली |

ब्रज में गाली बहुत दी जाती है; जहाँ अधिक प्रेम होता है, वहीं सरलता-सहजता-सरसता होती है, प्रेम के कारण ही ब्रजवासी गाली देते हैं; ऐसा ब्रज में ही है, बाहर संसार में कहीं ऐसा नहीं है |

मानमन्दिर में जितनी भी लड़कियाँ कथा-वाचन की तैयारी कर रही हैं, मैंने उनसे कह दिया है कि कथा के बदले पैसा मत माँगना; कथा कहो किन्तु पैसा मत लो | मैंने भी अपने पास आज तक कभी भी पैसा नहीं रखा | ८५ वर्ष की मेरी आयु है परन्तु अभी तक मैंने एक भी पैसा नहीं रखा, न बैंक में जमा किया | अब तो मृत्यु के किनारे आ गया हूँ, अब तो पैसा क्या रखूँगा |

ब्रजवासियो ! आप लोग दूध बेचते हैं, पहले ब्रज में दूध बिकता नहीं था | अब क्या किया जाए, गायें समाप्त हो गयीं | पहले इतनी गायें थीं कि गोपाल जी दिन-रात गायों में ही रहते थे | उनका नाम गोपाल और गोविन्द इसीलिए पड़ा | गोपाल उसको कहते हैं जो गायों का पालन करता है | जो गायों की रक्षा करता है, वह गोविन्द है | गोपालतापनी उपनिषद में भगवान् का गोपाल नाम लिखा है; सबसे पुराना नाम गोपाल है, कृष्ण नाम भी है | **"कृषिभूर्वाचकः शब्द णश्च निवृत्तिवाचकः |"** संसार की सत्ता जिसके हाथ में हो और जो इसमें आसक्त न हो, वह है 'कृष्ण' | 'कृष्ण-उपासक' यदि पैसा लेता है तो यह कलंक की बात है | मानमन्दिर में सवा सौ लड़कियाँ हैं, ऐसी संसार में कोई पाठशाला नहीं है, कोई स्कूल नहीं है जहाँ इतनी लड़कियाँ हों | बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में हजारों लड़कियाँ हैं किन्तु यहाँ जितनी लड़कियाँ हैं, वे भोग और धन की कामना से दूर हैं | यहाँ जो लड़कियाँ कथा कहतीं हैं, वे पैसा नहीं लेती हैं | मुरलिका जी को अमेरिका में कथा में एक करोड़ रुपये प्राप्त होने पर भी इन्होंने एक भी पैसा नहीं छुआ, इनकी छोटी बहिन श्रीजी ने भी प्रथम बार ऑस्ट्रेलिया में कथा करी और १७ लाख रुपये दिए जाने पर भी एक पैसा नहीं लिया | राधारानी की कृपा होगी तो इन दोनों बहिनों के अद्भुत त्याग से प्रेरणा लेकर यहाँ अन्य बालिकायें जो कथा कहना सीख रही हैं, ऐसी ही बन जाएँगी | कथा कहो किन्तु उसे बेचकर व्यापार मत बनाओ | श्रीभगवान् के 'कथा-कीर्तन' को लोभवश तुच्छ पैसों में कभी भी नहीं बेचना चाहिए | एकमात्र विशुद्ध भक्ति की दृष्टि से परम निष्काम भावपूर्वक श्रीभगवान् के नाम, रूप, लीला, गुण, धाम, धामी, जन आदि की महिमा का प्रचार-प्रसार करना ही वास्तविक भागवतधर्म है |

सबसे सरल साधन 'श्रीधाम-सेवन'

बाबाश्री के सत्संग 'धाम-महिमा' (२७/५/१९९८) से संकलित

सबसे पहले राधासुधानिधिकार ने श्रीधाम को नमस्कार किया, जैसे - बरसाना धाम है, श्रीगिरिराजजी धाम है, वृन्दावन धाम है, ये सब धाम हैं | भगवान् का नाम, रूप, गुण, लीला, जन और उनका धाम – ये सभी एक ही हैं | श्रीकृष्ण और उनका नाम एक ही हैं, नाम व नामी में भेद नहीं है | श्रीकृष्ण और उनका रूप एक ही हैं | उनकी लीला और कृष्ण एक ही हैं | केवल लीला का गान कर लो, वह भी कृष्ण-प्राप्ति ही है | श्रीकृष्ण का नाम जप लो, वह भी कृष्ण-प्राप्ति है; उनके रूप का चिंतन कर लो, वह भी कृष्ण-प्राप्ति है; उनके जनों की सेवा कर लो, वह भी कृष्ण-प्राप्ति है; उनके धाम में रह लो, वह भी कृष्ण-प्राप्ति है; ये सभी चीजें एक ही हैं, इनमें कुछ भी अंतर नहीं है; जो प्राणी इनमें अंतर (फर्क) समझता है, उसको उपासना की सिद्धि नहीं हो सकती, वह भगवत्प्राप्ति नहीं कर सकता; यही कारण है कि हम लोगों को भगवान् की प्राप्ति नहीं हो रही है | हमलोग धाम के प्रति प्राकृत भाव (जड़ बुद्धि) रखते हैं, इसलिए धामापराधी हैं | नाम के प्रति अपराध करते हैं, अतः नामापराधी हैं | संत-महापुरुषों के प्रति अपराध करने के कारण महदपराधी (भक्तापराधी) बोले जाते हैं | हमारी सांसारिक भावनायें हमें भगवान् से मिलने नहीं देतीं हैं, ये दुर्भावनाएँ हैं; इन दुर्भावनाओं को दूर करने के लिए सत्संग किया जाता है | जब तक असद् भावनाओं के अपराध दूर नहीं होते हैं, चमत्कार नहीं होता है, किसी प्रकार का अनुभव नहीं होता है | नाम, रूप, गुण, लीला, जन, धाम और धामी में सबसे सरल है - धाम | इसलिए धाम में श्रद्धा से रहना, निष्ठा से धाम की सेवा करना – यह भक्ति के प्रमुख अंगों में से माना गया है | भगवान् की भक्ति के चौंसठ अंग माने गये हैं | चौंसठ अंगों में जो पाँच प्रधान अंग हैं, उनमें धाम भी है | धाम की कृपा से बहुत जल्दी भगवान् की प्राप्ति होती है; ये बात सब जगह है, चाहे वह शिव-उपासना है, चाहे राम-उपासना है, चाहे कृष्ण-उपासना है, धाम की महिमा सब जगह है, हमारे ब्रज में सबसे ज्यादा है | ब्रजगोपियाँ मथुरा नहीं गयीं, द्वारका नहीं गयीं क्योंकि वे धामनिष्ठ थीं | कुरुक्षेत्र में जहाँ उनका कृष्ण से मिलन हुआ भी तो उन्होंने रस में कमी का अनुभव किया | गोपियों ने कहा कि यद्यपि कृष्ण वही हैं, हम भी वही हैं परन्तु ब्रज-वृन्दावन के बिना वह रस नहीं है |

भगवान् की प्राप्ति में 'धाम' सबसे सरल है, ऐसा सभी मानते हैं, केवल ब्रज की ही बात नहीं है; रामायण में भी गो. तुलसीदासजी स्पष्ट कहते हैं –

कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई |
राम परायन सो परि होई ||

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड – ९७)

लेकिन धाम का स्वरूप एकदम से नहीं खुलेगा; धाम में रह लो, जैसे - हम लोग रह रहे हैं वृन्दावन, बरसाना, नंदगाँव, गोवर्धन आदि में परन्तु धाम का स्वरूप तो तभी खुलेगा – **अवध प्रभाव जान तब प्रानी |**
जब उर बसहिं रामु धनुपानी || (रा.उ.का. – ९७)

यह सब जगह से हमने प्रमाण दिया, यह सार्वभौम सिद्धांत है | 'सार्वभौम' अर्थात् इस सिद्धांत को कोई काट नहीं सकता और जो अविश्वास करता है, उसे भक्ति नहीं मिलेगी क्योंकि यह कोई व्यक्तिगत विचार नहीं है | इसको सभी मानते हैं कि यदि अवध में रहोगे तो किसी न किसी जन्म में राम के परायण होगे | परन्तु केवल अवध में रहने से ही उसका कुछ प्रभाव नहीं मिलेगा | अयोध्या में रहने वाले भी कितने ही गड़बड़ काम किया करते हैं | जब हृदय में धामी तत्त्व आता है, तब धाम का प्रकाश होता है; उसी तरह से यहाँ भी है - जो ब्रज में निष्ठा के साथ रहता है, उसको एक दिन अवश्य कृष्णरति प्राप्त होती है किन्तु धाम का स्वरूप हृदय में तभी आयेगा जब श्रीराधिकारानी और श्रीकृष्ण हृदय में आकर बसते हैं |

इस तरह से 'श्रीराधासुधानिधि' में ग्रन्थकार ने सबसे श्रीधाम को नमस्कार किया है –

"तस्या नमोऽस्तु वृषभानुभुवो दिशेऽपि" – धाम को नमस्कार इसलिए किया कि 'धाम' सबसे सरल है; सरल इसलिए है क्योंकि 'धाम' का सेवन अखण्ड रूप से हो सकता है | नाम जप यदि करोगे तो उसमें बीच में भोजन करना पड़ता है, सोना पड़ता है, उस समय नाम-जप छूट जायेगा; इसी प्रकार रूप-चिंतन भी अखण्ड रूप से नहीं हो सकता | लीला-चिंतन भी अखण्ड रूप से नहीं हो सकता क्योंकि खाना-पीना, सोना आदि क्रियाएँ बाधक हैं | जन-सेवा (भगवान् से बढ़कर भक्तों की सेवा) भी बहुत कठिन है | सेवा करना तो बहुत ही कठिन है और हम यह समझते हैं कि जैसा कि रामायण में लिखा है –

"सब तें सेवक धरमु कठोरा |" (रा.अयो. - २०३)

'सेवा' संसार में सबसे कठिन है | शायद ही कोई करता होगा नहीं तो सेवा से सब घबराते हैं | प्रायः शिष्य-शिष्या, विरक्त साधु-संत आदि सब 'सेवा' से दूर भागते हैं | इसलिए भक्तों की सेवा करना तो बहुत कठिन है | भगवान् और उनके भक्तों की सेवा करना बहुत कठिन है | अतः सतत् सेवन तो न नाम का हो पाता है, न रूप का, न लीला का और न ही जन का | इसलिए सबसे सरल है - धाम | इसीलिए सुधानिधि के प्रथम श्लोक में ही धाम की वंदना की गयी है, यह एक विचित्र बात है | श्रीराधिकारानी प्रतिपाद्य विषय हैं किन्तु उनको नमस्कार नहीं किया गया, न उनके नाम को, न उनके भक्तों को, न उनके रूप, गुण और लीला को नमस्कार किया गया; 'धाम' को नमस्कार किया गया, इसमें रहस्य है | धाम की महिमा प्रत्येक उपासना में है, जैसे – शिवोपासना में उनके धाम 'काशी' के बारे में कहा गया है – **"काश्यां मरणान् मुक्तिः"** – काशी में मृत्यु होने से जीव मुक्त हो जाता है | 'रामोपासना' में अवध की महिमा कही गयी है –

बंदउँ अवध पुरी पावनि | सरजू सरि कलि कलुष नसावनि ||
सिय निंदक अघ ओघ नसाए | लोक बिसोक बनाइ बसाए ||

भगवती सीता जी के निंदक को भी जिस धाम ने बसाया, आश्रय प्रदान किया | 'श्रीधाममहाराज' का ऐसा विचित्र करुणामय स्वभाव है कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता | ब्रह्माजी ने ही जब ब्रज के ग्वा बाल और बछड़े चुराए और फिर श्रीकृष्ण के पास जाकर उनकी स्तुति की तो वे बोले नहीं; यह बड़ी विचित्र बात है | ब्रह्माजी जब श्रीकृष्ण के पास गये तो उन्होंने बहुत सुन्दर स्तुति की; ऐसी स्तुति तो इन्द्र आदि किसी देव ने नहीं की | ब्रह्माजी बोले –

नौमीड्य तेऽभ्रवपुषे तडिदम्बराय
गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय |
वन्यस्रजे कवलवेत्रविषाणवेणु –
लक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय ||

(श्रीभागवतजी १०/१४/१)

ब्रह्माजी ने अपनी स्तुति में बहुत ऊँचे सिद्धांत के श्लोक कहे, विस्तार से बहुत बढ़िया स्तुति की परन्तु श्रीकृष्ण कुछ बोले नहीं | जबकि ब्रह्माजी ने तो केवल बछड़ों और ग्वालबालों को चुराकर अलग रख दिया, उन्हें कोई कष्ट नहीं दिया, उन्हें मारने का विचार नहीं था, इनसे अधिक अपराध तो इन्द्र ने किया था, इतनी भयंकर वर्षा की जिससे कि ब्रजवासियों का नाश हो जाए | इन्द्र ने कहा था – **एषां श्रियावलिप्तानां कृष्णेनाध्मायितात्मनाम् |**
धुनुत श्रीमदस्तम्भं पशून् नयत संक्षयम् ||

(श्रीभागवतजी – १०/२५/६)

प्रलय करने वाले मेघों से इन्द्र ने कहा कि समस्त ब्रजवासियों को नष्ट कर दो और पशु अर्थात् इनके गायें-बछड़े आदि कुछ भी बचने न पायें, सबको मार दो |

यदि ब्रजवासियों ने इन्द्र की पूजा नहीं किया तो उन्हें दण्ड दे भी सकते थे हालाँकि उन्हें भी नहीं मारना चाहिए किन्तु गायों-बछड़ों ने इन्द्र का क्या अपराध किया जो उन्हें भी मारने का आदेश दे दिया; क्रोध भी हिसाब से किया जाता है | जिसने अपराध किया, उसे दंड दो तो ठीक भी है | अब किसी के पिता ने अपराध किया और

उसके गोद के बच्चे को दो-चार झापड़ लगा दिया तो सब कहेंगे कि बड़ा मूर्ख आदमी है, बच्चे को पीट रहा है |
धोबी से लड़ाई हुई और कुछ नहीं कर सके तो उसके गधे को ही पीटने लगे तो सब कहेंगे कि यह तो पागल है | ब्रजवासियों ने इन्द्र की पूजा न करके उसका अपराध किया तो इन्द्र इतना अधिक क्रोधित हो गया कि उसने प्रलय करने वाले मेघों को आदेश दे दिया कि ब्रज में जितनी भी गायें-बछड़े हैं, सबको नष्ट कर दो, कोई भी ब्रज में जीवित न रहे |

यह कितना भारी अपराध था, फिर भी श्रीप्रभु इन्द्र से बोले, क्यों बोले ? इन्द्र तो ब्रजवासियों को मारने के लिए गया था जबकि ब्रह्माजी का लक्ष्य तो ब्रजवासियों को मारने का नहीं था फिर भी श्रीकृष्ण उनसे नहीं बोले | इसका कारण यह है कि ब्रह्माजी ने बछड़ों और ग्वालबालों का साल भर के लिए श्रीकृष्ण से वियोग करा दिया जबकि इन्द्र तो मारने गया था किन्तु उसके कारण सभी ब्रजवासियों का श्रीकृष्ण के साथ संयोग हो गया | सभी ब्रजवासी 'गिरिराजजी' के नीचे आ गये और सात दिनों तक बड़ा आनन्द रहा | सात दिन, सात रात तक सब ब्रजवासी 'श्रीकृष्ण' के साथ रहे, मिलन का विलक्षण आनन्द सबको प्राप्त हुआ | जबकि ब्रह्मा के द्वारा वियोग कराने के कारण उनसे अपराध हो गया, उस अपराध के मार्जन हेतु भागवत में लिखा है – **"त्रिः परिक्रम्य...|"** ब्रह्माजी ने ब्रजभूमि की तीन बार परिक्रमा की |
श्रीसूरदासजी ने भी इस लीला को विस्तार से गाया है कि श्रीकृष्ण ने ब्रह्माजी से कहा **– "ब्रज परिक्रमा करहु, देह को पाप नसावहु |"** ब्रज की परिक्रमा करो और अपने शरीर के पाप को नष्ट करो |
इसीलिए ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा की जाती है, ऐसा करने से जो अनन्त अपराध हैं, वे भी नष्ट हो जाते हैं; जैसे - ब्रह्माजी ने भगवान् का बहुत बड़ा अपराध किया तो वह धाम की परिक्रमा करने से नष्ट हुआ, यह धाम का स्वरूप है | आज से नहीं सनातन काल से ब्रज की महिमा चली आ रही है | ब्रजवासी रसिया गाते हैं –

गिरिराज वास मैं पाऊँ, ब्रज तजि अनत न जाऊँ |

बरसाने के ब्रजवासी भी गाते हैं –

स्वर्ग लोक वैकुण्ठ न जाऊँ नाय बसूँ कैलास |
ऐसी कृपा करो महाराज सदा हम ब्रज में करें निवास ||

ऐसी कृपा करो कि ब्रज छोड़कर हम कभी स्वर्ग, वैकुण्ठ और कैलाश न जाएँ |

यह एक पुरानी परम्परा चल रही है, क्यों चल रही है? क्योंकि धाम महाराज सबसे सरल हैं | धाम का सतत् सेवन किया जा सकता है और चीजों का नहीं किया जा सकता | जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि यदि आप नाम जप करते हैं तो सोने पर नाम-जप बंद हो जायेगा | रूप-चिंतन करते हैं तो सोने पर वह भी बंद हो जायेगा | इसी प्रकार लीला-चिंतन आदि भी सोने पर रुक जायेगा परन्तु धाम में तो निष्ठा के साथ सोओगे तो भी वह भजन है | व्यासजी ने लिखा है –

काहू के बल भजन को, काहू के आचार |
ब्यास भरोसे कुँवरि के, सोवत पाँव पसार ||

इसलिए यहाँ (धाम में) सोना भी भजन है | अतः राधासुधानिधि के प्रथम श्लोक में ही धाम के बारे में कहा गया कि इस बरसाने को नमस्कार है, वृन्दावन को नमस्कार है, जहाँ राधारानी खेल रही हैं | जिस बरसाने में आकर ब्रह्माजी पर्वत बने | उन्होंने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की थी कि मुझे इस ब्रज में कुछ भी बना दो, यहाँ का पशु-पक्षी, लता-पता आदि कुछ भी बना दो | कोयल बना दो, पक्षी बना दो किन्तु इसी धाम में बसाए रखो | भँवरा बना दो या इस गह्वरवन में कुत्ता ही बना दो, कुत्ता बनने पर यहाँ के भक्तों की जूठन खाने को मिलेगी |

जमुना पुलिन निकुंज भवन में,
कोकिल ह्वै द्रुम कूक मचाऊँ |
श्रीराधा पद पदम मधुप ह्वै,
मधुरे मधुरे गुंज सुनाऊँ ||

कूकर ह्वै बन बीथिन डोलूँ ,
बचे सीथ रसिकन के पाऊँ |
ललित किशोरी आस यही है,
ब्रजरज तजि छिन, अनत न जाऊँ ||

ब्रजरस के रसिक श्रीरसखानजी ने कहा है –

मानुष हौं तो कहा रसखानि,
बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन |

मैं मनुष्य बनूँ तो इसी ब्रज में बनूँ |

जो पशु हौं तो कहा बस मेरो,
चरौं नित नन्द की धेनु मँझारन ||
जो खग हौं तो बसेरो करौं,
मिलि कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन |

पशु बनूँ तो नन्द बाबा की गाय बना दो | पक्षी बनूँ तो ब्रज के पेड़ों पर चिड़िया बनकर रहूँगा |

पाहन हौं तो वही गिरि को,
जो धरयो कर छत्र पुरन्दर कारन ||

यहाँ का पत्थर बना दो, कुछ भी बना दो | वृन्दावन महिमामृत शतक में तो धाम के विषय में यहाँ तक लिखा है – **"वृन्दारण्ये वरं स्यां कृमिरपि परतो नो चिदानन्ददेहो |"** वृन्दावन में एक कीड़ा बना दो किन्तु बाहर मुझे चिन्मय शरीर भी नहीं चाहिए | इस धाम का एक गन्दा से गन्दा कीड़ा बना दो; कृमि कहते हैं मल-मूत्र के बहुत छोटे कीड़े को, ऐसा गन्दा कीड़ा बना दो किन्तु इसी धाम का बनाओ | धाम के बाहर तो चिन्मय शरीर भी मुझे नहीं चाहिए | **"रङ्कोऽपि स्यामतुल्यः परमिह न परत्राद्भुतानन्तभूतिः |"** इस धाम में दरिद्र, भिखमंगा (भिखारी) बना दो | ऐसा गरीब बना दो जिसको न भोजन मिलता हो, न कपड़ा लेकिन धाम के बाहर अद्भुत अनन्त विभूतियाँ मुझे नहीं चाहिए | जैसे इन्द्र के पास अद्भुत विभूतियाँ हैं, रुपया-पैसा तो छोटी चीज है | अद्भुत विभूतियाँ, इन्द्रासन आदि भी मुझे नहीं चाहिए परन्तु धाम में भूखा मरना पसंद है | धाम में बेजोड़ दरिद्र बना दो जिसको कभी पानी भी न मिलता हो | **"शुन्योऽपि स्यामिह श्रीहरिभजन लवेनाति तुच्छार्थमात्रे |"** यहाँ धाम में भजन यदि नहीं हो पाता है तो भले ही न हो | 'भजन' शून्य से भी नीचे माइनस(minus) हो जाये, मैं यहाँ भजन से शून्य हो जाऊँ; लेकिन धाम में ही रहूँ | भजन से मनुष्य हीन कैसे होता है ? अति तुच्छ कौड़ी जोड़ता है | पैसा चाहिए, विषय-भोग चाहिए, अब कुआँ में जाये भजन-माला आदि इन तुच्छ चीजों के लिए मनुष्य भजन छोड़ देता है | शतककार कहते हैं कि भले ही यहाँ धाम में मेरे द्वारा भजन न हो और बाहर साक्षात् कृष्ण भी मिलें;

"लुब्धोनान्यत्रगोपीजनरमणपदाम्भोजदीक्षासुखेऽपि"

अन्यत्र चाहे साक्षात् गोपीजनरमण श्रीकृष्ण के चरणों की प्राप्ति हो जाए तो भी वह मुझे पसंद नहीं है | इसी बात को श्रीभट्टदेवाचार्य जी ने लिखा है –

"रे मन वृन्दा विपिन निहार |"

अरे मूर्ख ! रुपया-पैसा तो छोटी चीज है | चिन्तामणि एक ही है स्वर्ग में | यदि तुझको करोड़ों-करोड़ों चिन्तामणि मिलें तब भी ब्रज के बाहर मत जा |

"जद्यपि मिलें कोटि चिन्तामणि,
तदपि न हाथ पसार ||"

धन के लिए ब्रज के बाहर जाना तो दूर रहा, हाथ भी मत फैलाना |

विपिन राज सीमा के बाहर,
हरि हू को न निहार |"

धाम के बाहर कृष्ण भी मिल जाएँ तो उनको मत देखना |

गौ-सेवकों की जिज्ञासा पर माताजी गौशाला का
Account number दिया जा रहा है –
SHRI MATAJI GAUSHALA, GAHVARVAN,
BARSANA, MATHURA
Bank – Axis Bank Ltd
A/C – 915010000494364
IFSC – UTIB0001058
BRANCH – KOSI KALAN
MOB. NO. - 9927916699

'समत्व' से सर्वथा निष्पाप

बाबाश्री के श्रीमद्भगवद्गीता-सत्संग (२७/१/२०१२) से संकलित

श्लोक – ३८

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥

सुख-दुःख, लाभ-हानि तथा जय-पराजय को समान समझ कर युद्ध करो, तब तुमको पाप नहीं लगेगा |

यह श्लोक पाप को नष्ट करने का परमाणु बम है | समत्व की बुद्धि से पाप नष्ट हो जाता है, यह नियम है | समत्व की बुद्धि से मनुष्य भवसागर पार कर जाता है, जन्म-मृत्यु का बंधन नष्ट हो जाता है, जैसे - गीता में ही भगवान् ने कहा है -

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृत दुष्कृते |

(गीता २ /५०)

यहाँ बुद्धि से अभिप्राय है - 'समत्व बुद्धि' |

समत्व की बुद्धि से जो मनुष्य युक्त है, वह सुकृत-दुष्कृत दोनों प्रकार के कर्म-बंधन छोड़ देता है |

तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ||

भगवान् ने अर्जुन से कहा कि इसलिए योग के लिए तैयार हो जा | योग क्या है ? भगवान् ने योग की परिभाषा थोड़े में कही है – **"समत्वं योग उच्यते"** – सबसे बड़ा योग है 'समत्व' अर्थात् समान रहना, मन समान रहे, सुख-दुःख में, लाभ-हानि में, जन्म-मृत्यु आदि सभी परिस्थितियों में बुद्धि समान रहे | सिद्धि-असिद्धि में मनुष्य समान है तो समत्व योग आ गया |

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥

(श्रीगीताजी २/४९)

'समत्व योग' की तुलना में सकाम कर्म अत्यंत नीच है | इसलिए 'समत्व-बुद्धि' की शरण में जा क्योंकि फल की इच्छा करने वाले कृपण होते हैं | 'समत्व-बुद्धि' से सुकृत-दुष्कृत दोनों प्रकार के कर्म जल जाते हैं | सत्संग में जाने से यह लाभ होता है कि सच्चे संत मनुष्य को बोध कराते हैं कि क्या हुआ यदि तुम्हारा अपमान हो गया तो, कुछ चिंता मत करो, उदास मत हो - इस तरह से वे 'समत्व' सिखाते हैं | 'समत्व' के सीखने से ही मनुष्य के कर्म जल जाते हैं | सच्चा संत 'समत्व' सिखाता है, वह विषमता में जकड़े मनुष्यों को सिखाता है - तुम उदास होकर बैठे हो, इससे क्या लाभ है ? मन समान रखो, कोशिश करो, समत्व-बुद्धि से तुम्हारे कर्म जलेंगे | सुकृत-दुष्कृत दोनों प्रकार के कर्म जलेंगे, ये दोनों ही मनुष्य को बंधन में डालने वाले हैं | 'समत्व योग' में लग जाओ क्योंकि 'समत्व योग' ही कर्मों की कुशलता है | इससे मनुष्य जन्म-मृत्यु के बंधन से भी मुक्त हो जाता है | 'समत्व योग' इतना विशाल है कि इसे प्राप्त तो तुम बाद में करोगे, इसके विचार मात्र से ही समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे | किसी ने तुमको गाली दिया तो उसे समान-बुद्धि से सहन कर लो क्योंकि यह पाप को जलाने का परमाणु बम है | तुमने किसी के द्वारा कहे गए अपशब्दों को, गाली-गलौज को सहन कर लिया तो तुम्हारा पाप जल जाएगा और यदि नहीं सह पाए तो तुम्हारे कर्मों का नाश नहीं होगा | बदला लेने की सोचना अथवा दुःखी होना - ये सब पाप है, यह कल्मष है; ये सब समझना चाहिए और दूसरे को समझाना चाहिए | हम लोग उदास होकर मैल इकट्ठा करते हैं | भगवान् ने गीता २/२ में कहा कि नीच लोग इस कल्मष (उदासी) में मरा करते हैं | भगवान् ने स्पष्टतया कह दिया कि इससे स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती, नरक को गमन करना पड़ता है, इस लोक में भी अपयश होता है | कश्मल क्या है ? मोह की दया 'कश्मल' है | इस कश्मल से पाप लगता है तथा नरक और अकीर्ति की प्राप्ति होती है | गीता पढ़ने का यही व्यवहारिक लाभ है | जो गीताध्ययन करते हैं, उन्हें इस लाभ से वंचित नहीं रहना चाहिए | इस लाभ का सदुपयोग करना चाहिए कि हम अपने मन को जितना समान रखेंगे, उतना ही शीघ्र पाप का नाश हो जाएगा और भगवद्भक्ति की प्राप्ति होगी | गीता के बारहवें अध्याय में भक्त के लक्षणों का

उल्लेख किया गया है | भगवान् ने स्पष्ट रूप से कह दिया है – **समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।**
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥

(श्रीगीताजी १२/१८)

ऐसा भक्त भगवान् को प्रिय लगता है जो शत्रु और मित्र के प्रति समान है, मान-अपमान के प्रति सम है, शीत-उष्ण व सुख-दुःख में समान है |

भगवान् का प्रिय बनने के लिए अथवा पाप नाश के लिए अथवा गुणातीत होने के लिए भी समान होना आवश्यक है | माया से पार वही जाएगा जो समान होगा |

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो ।
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥

(श्रीगीताजी १४/२१)

अर्जुन ने कहा - तीन गुणों से अतीत मनुष्य किन लक्षणों से युक्त होता है और किस प्रकार के आचरणों वाला होता है तथा किस उपाय से मनुष्य त्रिगुणातीत होता है ? इस प्रश्न का भगवान् ने उत्तर दिया -

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः॥
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥

(श्रीगीताजी १४/२४, २५)

समत्व-बुद्धि के अभ्यास से मनुष्य माया के पार चला जाता है | इस प्रकार समत्व-बुद्धि के लाभ हैं - एक तो माया को पार कर जाना, दूसरा कर्मों का नाश होना, तीसरा भगवान् की भक्ति की उपलब्धि होकर भगवान् का प्रिय बनना |

किसी ने अपमान किया, गाली दी तो उसे सह लो, समत्व-बुद्धि रखो, इसमें तुम्हारा लाभ है, नुक्सान नहीं है; इससे एक महत्वपूर्ण लाभ तो यह होगा कि तुम भगवान् के प्रिय बन जाओगे, दूसरा लाभ यह है कि गुणातीत हो जाओगे, तीसरा लाभ यह है कि तुम्हारे कर्मों का नाश हो जाएगा | ये सब ऐसे लाभ हैं कि इनको सदा स्मरण रखना चाहिए और अपमान करने वाले के प्रति क्रोध नहीं करना चाहिए, बदला नहीं लेना चाहिए अपितु उसे क्षमा कर देना चाहिए | उसके अपकार को समत्व-बुद्धि के साथ सह लो; समत्व बुद्धि के केवल विचार मात्र से ही पापों का क्षय हो जाएगा | पाप तो तुम्हारा स्पर्श भी नहीं कर सकता यदि तुम केवल समानता का अभ्यास ही कर लो, समानता का विचार ही कर लो | लाभ-हानि, जय-पराजय, मान-अपमान आदि समान हैं; इनको समान समझने से पाप तुम्हारा स्पर्श भी नहीं कर सकता किन्तु हम लोग गलत रास्ता अपनाते हैं | मन को विषम कर लेते हैं | किसी ने निंदा किया, अपमान किया अथवा गाली दिया तो उदास हो जाते हैं और सोचते हैं कि बदला लेना चाहिए जबकि सह लेने में, मन को समान रखने में बहुत बड़ा लाभ है | हम लोग इन लाभों को छोड़ देते हैं, गँवा देते हैं | सुख-दुःख, लाभ-हानि तथा जय-पराजय को समान कर लो फिर चाहे तुम युद्ध में हजारों लोगों को मार डालो, तुमको पाप छू नहीं सकेगा | भयानक से भयानक पाप कर्म करने पर भी पाप तुम्हारा स्पर्श नहीं कर सकता यदि तुम मन में समान भाव रखते हो | 'समान भाव' से तात्पर्य समान क्रिया से भी है, जैसे - न लड़ना-झगड़ना, न बदला लेना; राग-द्वेषजन्य क्रियाएँ तो तुच्छ लोग किया करते हैं |

गीता के अध्ययन व श्रवण-कथन करने का यही फल है कि जीवन में समानता आ जाए, विषमता नहीं आये कि जरा-सी बात पर क्रोधित हो गए, उदास हो गए और कटु वचन कहने लगे |

समत्व का अभ्यास इतना बड़ा है कि पाप छू नहीं सकता | युद्ध करने, हत्या करने पर भी चित्त यदि समान है तो पाप स्पर्श नहीं कर पाएगा | गीता पढ़ने का यही फल है कि हम ऐसे बनें कि पाप हमें छू न सके | भगवान् ने ऐसी बातें बतायीं हैं कि संसार में रहने पर भी मनुष्य को संसार छू नहीं सकता और मनुष्य सारे संसार को जीत लेता है |

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥

(श्रीगीताजी ५/१९)

भगवान् ने कहा कि विश्व-विजय करने के लिए कोई लड़ाई-झगड़ा मत करो, केवल अपने मन को समान कर लो | 'सर्ग' माने सारी सृष्टि तुमने जीत लिया | सब कुछ निर्दोष समान ब्रह्म है, तुम्हारी ब्रह्म में स्थिति हो जायेगी |

इसलिए ऐसी चीजें भगवान् ने गीता में बतायीं कि बिना युद्ध किये तुम सारे संसार को जीत सकते हो | वैसे ही २/३८ में बताया-नैवं पापमवाप्स्यसि - युद्ध करने पर भी पाप तुमको नहीं छू पायेगा |

सुख-दुःख समान हैं, लाभ-हानि समान हैं, जय-पराजय समान है, इसका विचार ही तुमको पाप से बचा लेगा, केवल इसके विचार से ही पाप तुमको छू नहीं पायेगा | समे कृत्वा का अर्थ है ऐसा विचार करके |

इसलिए गीता पढ़ने के बाद समानता का अभ्यास करना चाहिए और दूसरों को भी इसे सिखाना चाहिए | यही भगवान् कहते हैं कि जो मनुष्य ये सब बातें दूसरों को सिखाता है, उससे अधिक प्रिय न कोई संसार में था, न है, न होगा | ऐसा भगवान् ने १८/६८ में कहा है –

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥

(श्रीगीताजी १८/६८)

मेरी भक्ति का लक्ष्य करके जो इस ज्ञान को मेरे भक्तों में कहेगा, वह निश्चय ही मुझे प्राप्त कर लेगा |

भगवान् का प्रिय बनने के लिए ऐसे गुणों का होना जरुरी है | भगवान् ने कहा –

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥

(श्रीगीताजी १०/९)

मेरे भक्त मेरी ही चर्चा करते हैं और एक दूसरे को बोध(ज्ञान) देते हैं |

ऐसी आदत हमें डालनी चाहिए, इससे भगवान् प्रसन्न होते हैं, इसमें पैसा नहीं खर्च होता है | इससे सहज में लोकसंग्रह भी होता है, परोपकार भी होता है |

एक दूसरे को बोध (ज्ञान) देना चाहिए | ऐसा नहीं कि हमको कथा कहने के लिए मंच पर बिठाया जाएगा तभी हम बोध देंगे | बिना कथा-प्रवचन के भी हम किसी को बोध दे सकते हैं | किसी की बुद्धि विषम है तो उसको समझाकर समान करना चाहिए, समत्व योग सिखाना चाहिए | दो आदमी आपस में लड़-झगड़ रहे हैं तो उनको शांत कर दो, समानता की बात कह दो, उन्हें समानता सिखा दो | श्लोकों को याद रखो, श्लोकों को कह दो क्योंकि प्रमाण से कोई बात दिमाग में बैठती है | तुम्हारे पास कोई व्यक्ति है, यदि उसकी बुद्धि विषम है और तुमने उसको समान बना दिया, उसको बोध दिया तो सतत युक्त ऐसे भक्तों को भगवान् बुद्धियोग देते हैं और उनके अज्ञान का नाश कर देते हैं |

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥

(श्रीगीताजी १०/१०)

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥

(श्रीगीताजी १०/११)

ऐसा भक्त भगवान् का अत्यंत प्रिय बन जाता है | (गीता-१८/६८) ये सब बातें याद रखनी चाहिए क्योंकि भगवान् चाहते हैं कि हम लोकसंग्रह, लोकोपकार करें | यह आवश्यक नहीं है कि व्यासासन पर, कथा की गद्दी पर बैठ कर ही परोपकार होता है | परस्पर बात कर रहे हैं, वहां कथा (प्रवचन) नहीं कह रहे हैं परन्तु बातचीत में भी ज्ञान दिया जा सकता है | बोलना-चालना व्यवहार में भी ज्ञान दिया जा सकता है और ऐसा करके संतुष्ट होना चाहिए | हमने प्रयत्न किया चाहे वह सफल हुआ अथवा नहीं हुआ | भगवान् की आज्ञा तो हमने मान ही लिया इसलिए समत्व के अभ्यास से कई लाभ होते हैं | एक तो समत्व के अभ्यास से मनुष्य स्थितप्रज्ञ हो जाता है | स्थितप्रज्ञ होने के लिए बुद्धि का समान होना जरूरी है |

'गौ-संवर्द्धन' से ही होगा उज्जवलतम 'भारतवर्ष'

गौ-खिरक को ही 'ब्रज' कहा गया। 'ब्रज' का एक नाम 'गोकुल' भी है, इस गोकुल ने ही कन्हैया को 'गोपाल' बनाया, 'गोविन्द' बनाया। गौ-चर्चा ही ब्रज-चर्चा का पूरक है अतएव इसकी अतिशयावश्यक चर्चा यहाँ की जा रही है।

"यत्र गावो भूरिश्रृंगाः अयासः" (ऋग्वेद.१/१५)

जहाँ गायें हैं, वहीं ब्रज है।

"व्रजन्ति गावो यस्मिन् स व्रजः।"

भूमि के सप्त आधार स्तम्भों में से प्रथम स्तम्भ है – गौमाता।

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही॥

(स्कन्दपुराण ४/२/९०)

इस भूमि की आधार है – श्रीगौमाता।

जानते हो, इस आधार पर प्रथम प्रहार किया था कलियुग ने। उस कलियुग का दमन तो कर दिया श्री परीक्षित जी ने किन्तु अब कलियुग के अनेकों बाप-दादा आ गए हैं। जो इस आधार स्तम्भ को विदीर्ण करने के लिए निर्ममता से अघ्न्या (अवध्या) गौ का वंदन के स्थान पर हनन कर रहे हैं।

श्रीकृष्णावतार से न केवल भारत की प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व की रक्षा हुई थी। गोपियाँ कहती हैं –

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम्॥ (श्रीभागवतजी १०/३१/१८)

कृष्ण ! तुम्हारे आने से विश्व मंगल हुआ। कैसे? तुमने गौ सेवा की। 'गोपालक' ही गोपाल का बालक है। सम्पूर्ण संसार जानता है कि गवामृत से शुद्ध-बुद्धि, पवित्र-चरित्र का निर्माण होता है। बुद्धि यदि शुद्ध है तो राग-द्वेष, कलह-विषाद स्वतः संसार से नष्ट हो जाए,********** प्रेम का संचार हो जाए। यदि आज अनाद्या अवध्या गौ का वध बंद हो जाए तो भारतवर्ष सशक्त व स्वराट् बन जाए। गो-गोपाल के सेवक का कदापि कोई अभद्र नहीं हो सकता है।

किसने नहीं की गौसेवा?

विधि-हरि-हर ने स्वयं गौ-स्तवन किया। महदपराध होने पर ऋषियों से शप्त होकर शिवजी ने गोलोक जाकर सुरभि का स्तवन किया। सुरभि ने स्नेहपूर्वक शिवजी को गर्भस्थ कर लिया। देवगणों ने ढूँढ़ते हुए गोलोक में स्थित सुरभि से प्रार्थना की, तब सुरभि ने एक वत्स को जन्म दिया जो नीलवृषभ बोले गए, यही पंचानन थे। श्रीरामजी के जन्म के पूर्व महाराज दशरथजी ने दस लाख गायों का दान किया। **"गवां शत सहस्राणि दश तेभ्यो ददौ नृप"**

(वाल्मीकि रामायण १/१४/५०)

इस गौदान से अग्निदेव यज्ञ में प्रसाद लेकर प्रकट हुए। राम जन्मावतार के बाद पुनः महाराज दशरथ जी ने बहुसंख्यक गौदान किया।

"हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह"

(रा. बा.का.१९३)

पुनः विवाह-अवसर पर चार लाख गायों का दान किया।

"गवां शतसहस्त्राणि चत्वारि पुरुषर्षभः"

(वा. रा.१/७२/२३)

चारि लच्छ बर धेनु मगाईं।
काम सुरभि सम सील सुहाईं॥ (रा.बा.३३१)

फिर वनयात्रा काल में भी गौदान किया।

"बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार"

(रा.बा.का.१९२)

गौ-रक्षक रामभक्त है, गौ-नाशक रावण का वंशज है क्योंकि रावण का आदेश था –

जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं।
नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं॥ (रा.बा.का.१८३)

राज्याभिषेक के अवसर पर रामजी ने एक लाख पयस्विनी गायों का दान किया। मानस जी में मिलता है राम जी ने करोड़ों अश्वमेघ यज्ञ किए।

"कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे" (रा.उ.का.२४)

वे यज्ञ बिना गवामृत के नहीं होते थे। गौ यज्ञ का मूल है। अत: श्री राम जी की राजकीय गौशालाओं में असंख्य गायों की सेवा होती थी और तब वे मनोवांछित दुग्ध देती थीं। **"मनभावतो धेनु पय स्रवहीं"** (रा.उ.का.२३)
यह तो राम जी की गौभक्ति थी और गोपाल की गौभक्ति तो वाणी का विषय ही नहीं बन पाती। जब चलना सीखा तो सर्वप्रथम वत्स आश्रय ही लिया –

यर्ह्यङ्गनादर्शनीयकुमारलीला वन्तरर्व्रजे तदबलाः प्रगृहीतपुच्छैः।
वत्सैरितस्तत उभावनुकृष्यमाणौ प्रेक्षन्त्य उज्झितगृहा जहृषुर्हसन्त्यः॥ (भा.१०/८/२४)

वत्स पुच्छ पकड़कर इस बालक ने खड़ा होना सीखा। गोबर का उबटन लगाते एवं गौमूत्र से स्नान करते। शेष इच्छा गौचारण में पूरी हो जाती, जिस समय सघन केशराशि गौधूलि से भर जाती। गोपियों ने कहा है –

उत्सवं श्रमरुचापि दृशीनामुन्नयन् खुररजश्छुरितस्रक् ।
दित्सयैति सुहृदाशिष एष देवकीजठरभूरुडुराजः॥
(भा.१०/३५/२३)

अभी दूध के दाँत भी नहीं गिरे और वत्सचारण की हठ कर बैठे। नन्ददम्पत्ति ने विचार किया –

यदि गोपसङ्गावस्थानं बिना न स्थातुं पारय तस्तर्हि व्रजसदेशदेशे वत्सानेव तावत्सञ्चारयतामिति।
(गोपालचम्पू १०/११)

बड़े चंचल हैं ये दोनों। गौ-दर्शन के बिना रह नहीं सकते।

आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय।
गोविन्द को गायन में बसवो ही भावे॥ (छीतस्वामीजी)

चलो वत्स चारण का तिलक तो कर ही दें। पाँचवा वर्ष पूरा होते-होते तो ये गौचारण के लिए मचल बैठे।

श्रीशुक उवाच
ततश्च पौगण्डवयःश्रितौ व्रजे बभूवतुस्तौ पशुपालसम्मतौ।
गाश्चारयन्तौ सखिभिः समं पदै वृन्दावनं पुण्यमतीव चक्रतुः॥
(भा.१०/१५/१)

कार्तिक शुक्ल अष्टमी को यह स्वीकृति भी मिल गई मैया-बाबा से फिर एक दिन गौदोहन की हठ भी कर बैठे।
गौचारण काल में कन्हैया ने कभी पन्हैया भी नहीं पहनीं -

गोपालानं स्वधर्म्मो नस्तास्तु निश्छत्र-पादुकाः।
यथा गावस्तथा गोपास्तर्हि धर्म्मः सुनिर्म्मलः॥
धर्म्मादायुर्यशोवृद्धिर्धर्म्मो रक्षति रक्षितः।
स कथं त्यज्यते मातर्भीषुधर्म्मः सुनिर्म्मलः॥
(गोविन्द लीलामृत.५/२८,२९)

कैसी विचित्र है गोपाल की गौ भक्ति?
श्रीसूरदास जी के शब्दों में –

दे मैया री दोहिनी दुहि लाऊँ गैया।
माखन खाय बल भयो तोहि नन्द दुहैया॥
सेंदुर काजर धुमरी धौर मेरी गैया।
दुहि लाऊँ तुरतहि तब मोहि कर दै घैया॥
ग्वालन के संग दुहत हों बूझो बल भैया।
'सूर' निरख जननी हँसी तब लेत बलैया॥

ऐसे एक नहीं सैंकड़ों पद प्राप्त हैं गौचारण लीला, गौदोहन लीला सम्बन्धी गौभक्ति के।
दानलीला में मिलता है –
ब्रजाङ्गना ने कहा – "लाला कैसे छुटोगे पाप ते, काहू तीर्थ हू नहिं न्हात हौं"
श्रीकृष्ण ने कहा – "प्यारी गौरज गंगा नहात हौं और जपत गऊन के नाम हौं। वृषभान लड़ैती दान दै॥"
ब्रजाङ्गना बोली – "नंदराय लला घर जान दै।"

गोपालाङ्गण कर्दमे विहरसे विप्राध्वरे लज्जसे।
ब्रूषे गोसुत हुंकृतैः स्तुतिपदैर्मौनं विधत्से सतां॥
(कृष्णकर्णामृत)

बड़े-बड़े योगीन्द्रों-मुनीन्द्रों के मन्त्रों द्वारा आहूत करने पर भी बोलते नहीं हैं और यहाँ
वत्सों से पूछते हैं – "धौरी के तेरी मैया ने दूध पिवायौ कि नहीं? "
वत्स – "हूँ ऽऽऽऽऽऽ ! "
राम-कृष्ण ने जिनकी वंदना की उस गौमाता की सेवा ही सच्ची राष्ट्र सेवा व सच्ची भगवदाराधना है।
यह भगवद् संपदा (गौ) पृथ्वी के लिए वर व भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड है। ऐहिक हो अथवा आमुष्मिक, श्रेय-सिद्धिकारक है 'गौसेवा'।

श्रीवशिष्ठजी की गौसेवा बड़ी ख्यात है, इनको गौ तत्ववेत्ताओं का आद्याचार्य कहा। महाभारत में राजा सौदास को आपने गौसेवा धर्म का उपदेश दिया -
गौओं का नाम-कीर्तन किए बिना न सोए और उनका स्मरण करके ही प्रातः उठे।

नाकीर्तयित्वा गा: सुप्यात् तासां संस्मृत्य चोत्पतेत्।
सायंप्रातर्नमस्येञ्च गास्तत: पुष्टिमाप्नुयात्॥

(महा.भा.अनु.७८/१६)

गाश्च संकीर्तयेन्नित्यं नावमन्यते तास्तथा।
अनिष्टं स्वप्नमालक्ष्य गां नर: सम्प्रकीर्तयेत्॥

(महा.भा.अनु.७८/१८)

जिन श्रीवेदव्यासजी का उच्छिष्ट है सम्पूर्ण वैदिक साहित्य "**व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वम्**" आपने भी अपने समग्र साहित्य में गौसेवा को ही प्रमुख माना, चाहे वह स्कन्द पुराण हो, भविष्यपुराण हो, पद्मपुराण हो, अग्निपुराण अथवा महाभारत हो सर्वत्र गौ-गरिमा का ही वर्णन है। च्यवन ऋषि ने तो राजा द्वारा एक गाय दिए जाने पर कहा – "**महाराज ! आपने मुझे खरीद लिया**।"
महाराज ऋतम्भर ने अपूर्व गौसेवा की, जाबाल पुत्र सत्यकाम को गौसेवा से ही ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हुई, महाराज दिलीप ने गौभक्ति से रघु जैसे परम यशस्वी पुत्र को प्राप्त किया, जिससे वंश का नाम ही रघु वंश हो गया, नामदेव ने मृत गाय को जीवित किया। कैसा विलक्षण था उनका गौ-प्रेम। कलिकाल में भी वीर बालक शिवाजी तो शैशव से ही गौभक्त थे। गौ पर होने वाले अत्याचार को नहीं देख सकते थे। गौप्राणरक्षणार्थ अनेकों बार अकेले कसाईयों से भिड़ गए। गौवधिकों का वध भी कर डाला।

समस्त समस्याओं का निदान - गौ सेवा से

आर्थिक समृद्धि का मुख्य स्रोत है – गाय। देश की लगभग ८०% जनता कृषि जीवी है, वह कृषि पूर्णरूपेण गौ पर अवलंबित है। गोमय से बढ़ती है पृथ्वी की उर्वरा शक्ति। गोबर की खाद से उत्पन्न अन्न से न केवल शरीर अपितु मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ भी शुद्ध, स्वच्छ व शक्तिसंपन्न होती हैं। **"अन्नशुद्धौ सत्वशुद्धि, सत्वशुद्धौ ध्रुवास्मृति.... "**
आज भी गौवंश की उपेक्षा न करके उसी से कृषि कार्य सम्पादित हो तो न गौवध हो, न जनवध। आज की मँहगाई ने जनवध कर दिया। डीजल, पेट्रोल की आए दिन मँहगाई वृद्धिरत है, क्या आवश्यकता है डीजल, पेट्रोल की? गोबर गैस से सब कार्य क्यों न किये जायें? गोबर गैस से चलित वाहन आज तेजी से हो रहे वायु प्रदूषण पर भी रोक लगायेगा
विशुद्ध भाव से हमें गौसेवा करनी चाहिए। इसके निमित्त प्राप्त धन का दुरुपयोग हमें नारकीयता में ले जाएगा। गाय जब अपने दूध से अपना स्वार्थ नहीं रखती तो हम गौ-सेवा के धन से अपनी स्वार्थपूर्ति करें यह उचित नहीं।
"**गावो विश्वस्य मातरः**" गाय किसी व्यक्ति विशेष की नहीं सम्पूर्ण विश्व की माँ है, अतः सम्पूर्ण राष्ट्र का परम धर्म है गौवध-निवारण व गौसेवा। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र के २/२६ में गौरक्षा पर राजा को पूर्ण रूपेण ध्यान देने का निर्देश किया है। अशोक के शिलालेखों में गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध द्रष्टव्य है।
बदाउनी ने लिखा है कि हिन्दुओं तथा जैनियों के प्रभाव से अकबर के राज्य में कोई भी गौ-वध नहीं कर सकता था। बी.ए. स्मिथ ने अपने इतिहास प्र.-१०१ पर जहाँगीर के विषय में यहाँ तक लिखा है कि वह जान या अनजान में भी गौहत्यारों को फाँसी पर लटकाने में नहीं हिचकता था। महात्मा गाँधी, स्वामी करपात्री जी, प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी, हनुमान प्रसाद पोद्दार जी (भाई जी) ने भी प्रयास किया भारत में पूर्णतः गौवध बन्द कराने का किन्तु यह देश का दुर्भाग्य है जो अंधे शासक अपने लाभ को न देख पाने के कारण विनाश की ओर बढ़ रहे हैं गौरक्षक के नाम पर गौभक्षक बन रहे हैं। ऐसी स्थति में पवित्राचार, श्री, ऐश्वर्य एवं शांति स्थापन देश में कदापि सम्भव नहीं है। जब तक भारत में गाय का आदर था, दूध-दही की नदियाँ बहती थीं, देश में शांति थी, देवता भी यहाँ जन्म लेने को लालायित रहते थे।

नंदमंदिर में पूज्य बाबा महाराज, मानमन्दिर के साधू, साध्वीयों का अभूतपूर्व स्वागत

नंदमंदिर, नंदगांव में मानमंदिर बरसाना के संत व साध्वीयों का स्वागत वहाँ के सेवायत गोस्वामी श्रीसुरेशजी द्वारा किया गया। यद्यपि जैसा बरसाना और नंदगांव का पुरातन सम्बन्ध रहा है, वह आज भी दृष्टिगोचर होता है फिर भी उसकी नवीन अनुभूति कदाचित होती है तो विशेष आनंद का वातावरण उपस्थित हो जाता है। पारस्परिक उस अलौकिक प्रेम की कल्पना अन्यत्र कहीं संभव नहीं है। श्रीरमेश गोस्वामी, सुरेश गोस्वामी आदि की सेवा जब आती है तो ब्रज के परम विरक्त संत पद्मश्री श्री रमेश बाबा व उनके परिकर को ये सभी अवश्य आमंत्रित करते हैं। वहाँ भगवत्प्रसादी का तो एक बहाना है परंतु वास्तविकता यह है कि उनका 'प्रेम' मिलन के लिए बाध्य कर देता है। दिनांक ११ सितम्बर २०२१ को गोस्वामी श्री सुरेश जी की सेवा में बाबा महाराज का सम्पूर्ण परिकर नंदमंदिर पहुँचा तो मंदिर में अत्यन्त हर्ष का वातावरण उपस्थित हो गया। बाबाश्री सहित सैकड़ों साध्वियों को दुपट्टा चुनरी व माला भेंट कर भव्य स्वागत सुरेश जी ने किया। अत्यन्त प्रेम के साथ सभी को भोजन-प्रसाद पवाया। पूज्य श्री बाबा महाराज ने भाव-विभोर होकर कहा कि ब्रजवासियों जैसी उदारता संसार में कहीं नहीं है, इनका प्रेम अलौकिक है; यही कारण था कि वह रसराज इनकी दासता करता रहा।

श्री राधा मान विहारी के मान-लीला की अद्भुत झलकियाँ

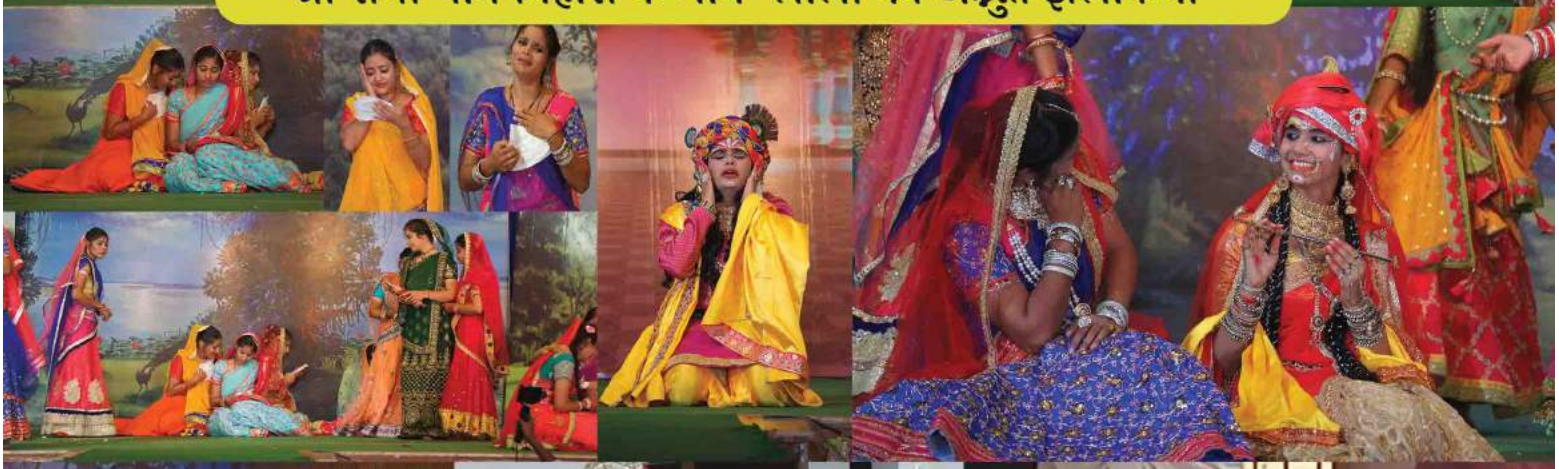

पूज्य बाबाश्री एवं मान मन्दिर के साधु-संतों, साध्वियों का नन्दभवन में अभूतपूर्व स्वागत

RNI Reference No. 1313397 | Registration No. UP BIL-2017/72945 | Title Code UP BIL-04953 | Postal Regd. No. MTR 093/2021-2023

ब्रज के पर्वतों की रक्षा के प्रति संघर्षशील ब्रज प्रेमियों के सक्रियता सम्मेलन में उपस्थित पूज्य बाबाश्री एवं मलूकपीठाधीश्वर श्री राजेंद्र दास जी महाराज।

देहगाँव, रासोली (रासवन) में मान मन्दिर के संत श्री रामजी लाल शास्त्री जी के द्वारा श्रीमद भागवत कथा

कथा में पधारे पूज्य बाबाश्री, मलूकपीठाधीश्वर श्री राजेंद्र दासजी महाराज एवं बरसाना के संत श्री विनोद बाबाजी महाराज

श्री मान मंदिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा Gupta Offset Printers A -125 /1, Wazirpur Industrial Area, New Delhi, 110052 से मुद्रित एवं मान मंदिर सेवा संस्थान, गह्वर वन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित